नमो नमो नारायन देवा ॥ का में जोग सकौं की सेवा ॥
तुइं दयालु सबके उपराहीं। सेवाकेर आस तुहि नाहीं ॥
नामोहिं गुन न जीभ रस वाता। तुइं दयालु गुन निरगुन दाता ॥
पुरवहु मोर दरसकी आसा। हौं मारग जो करौं सुआसा ॥

तेहि विधि विनय न जान्यो जेहि बिधि अस्तुति तोर।
कर सुदृष्टि औ किरपा इच्छा पूजे मोर ॥

कै अस्तुति जो बहुत मनावा। सबद कोटि मण्डपमहं आवा ॥
मानुष प्रेम भयो वैकुंठी। नाहत काहि छार एक मुंठी ॥
प्रेमहि माहिं बिरह-रस रसा। प्रेमके घर मधु अमिरत वसा ॥
नष्ट धाय जो मरे तो काहा। सत जो करे वैठि तेहि लाहा ॥
एक वार जो मन दे सेवा। सेवहि फल प्रसन्न है देवा ॥
सुनि कै सबद मंडप भंकारा। वैठो आय पुरबके द्वारा ॥
पिंड चढ़ाय छार चित आंटी। माटी होय अन्त जो माटी ॥

माटी मोल न कछु लहे औ माटी सब मोल।
दीठि जो माटी सो करै माटी होय अमोल ॥

वैठि सिंह-छाला होय तपा। पद्मावत पद्मावत जपा ॥
दीठि समाधि वही सों लागी। जेहि दरसन कारन वैरागी ॥
किंगरी गहे बजावे झूरी। भोर सांझ सुनिकै नित पूरी ॥
कन्था जरे अगिन जनु लाघि। विरह ढंढोर जरत न वुझाधि ॥
नयन रात निसि मारग जागी। चख चकोर जानहुं ससि लागी ॥
कुण्डल गहे सीस भुइं लावा। पांवर होउं जहां वै पावा ॥
जटा छोरके बार बहारों। जेहि पथ आव सीस तहं वारौं ॥

चारहु चक्र फिरै मन खोजत डंड न रहूं थिर वार ॥
होयके भस्म पवन संग धाऊं जहां सो प्रान अधार ॥
पद्मावत तहं जोग संजोगा। परी प्रेमवस गहे बियोगा ॥
नींद न परी नयन जो आवे। सेज केवांच जानु कोइ लावे ॥
दहै चन्द औ चन्दन चीरू। दग्ध करै तन विरह गंभीरू ॥
कलप समान रयनही वाढ़ी। तिल तिल भरु जुग जुगपर गाढ़ी
गहै वीन मग रयन विहाये। ससि वाहन नित रहै उनाये ॥
पुनि धुनि संग और हो लागी। ऐसी विथा रयन सब जागी ॥
कहांसो भंवर कमलरस-लेवा। आय परी होय घरन परेवा ॥

सो धन विरह-पतंग भइ जरा चहै तेहि दीप।
कंत न आव भृंग होय को चन्दन तन लीप ॥
परी विरह-वन जानो घेरी। अगम असूझ जहां लग हेरी ॥
चतुर दिसा चितवे जनु भूले। सो वन कौन जो मालति फूले ॥
कमल भंवर ओही वन पावे। को मिलाय तन-तपन बुझावे ॥
अंग अंग अस कमल सरीरा। हिय भा पियर प्रेमकी पीरा ॥
चहो दरस रवि कीन्ह विकासू। भंवर दीठि मन लाग अकासू ॥
पूंछे धाय वारि कहु वाता। तुइं जस कमल करी रंग राता ॥
केसर वरन रंग भा तोरा। मानहुं मनहि भयो कुछ फोरा ॥

पवन न पावे संचरी भंवर तेहों नहिं बैठि।
भूल कुरंगिन कस भई जानु सिंह तुइ डीठि ॥
धाय सिंह धर खात्यों भारी। को तस रहत अहे जस वारी ॥
जोवन सुनो कि नवल वसन्ता। तेहि वन परा हस्थि मैमन्ता ॥

अब जोवन-बारौ को राखा। कुंजर विरह बिधासि साखा॥
मैं जानो जानत रस भोगू। जोवन कठिन सताप वियोगू॥
जोवन गरुआ पेल पहारू। सहि न जाय जोवन कर भारू॥
जोवन अस मनमत्त न कोई। नवे हस्थ जो आंकुस होई॥
जोवन भरि भादों जस गङ्गा। लहरें देइ समाय न अङ्गा॥

परयौं अथाय धाय हौं जोवन-उदधि गंभीर।
तहं चितवौं चारहु दिस को गहि लावे तीर॥

पद्मावत तुइ समुद सयानी। तुइ सर समुद न पूजी रानी॥
नदी समाय समुदमहं आई। समुद डोल कहु कहां समाई॥
असहौं कमल करी हिय तोरा। अइहै भंवर जो तो कहं जोरा॥
जोवन तुरी हाथ गहि लीजे। जहां जाय तहं जाय न दीजे॥
जुवन-जोर माते गज अहे। गहहु ज्ञान-अंकुस जिमि रहे॥
अबहिं बार तुइं प्रेम न खेला। का जानिस कस होय दहेला॥
गगन दीठि कर पाय तराहीं। संरज देखकर आवत नाहीं॥

जब लग पीउ मिले तुहि साधि प्रेमकी पीर।
जैसे सीप स्वातिकहं तपै समुदमंझ नीर॥

दहत धाय जोवन औ जीऊ। जानहु परा अगिनिमहं घीऊ॥
करवट सहौं होत दुइ आधा। सही न जाय विरहकी दाधा॥
विरह-समुदं.विषहर अस भारा। भंवर मेल जिव लहर न मारा
विरह नाग होअ सिर चढ़ डसा। वही अगिन चन्दनमहं बसा॥
जोवन-पंखी विरह-वियाधू। केहरि भयो कुरंगिन-खाधू॥

कनक पानि कित जोवन कीन्हा। औटन कठिन विरह वह दीन्हा
जोवन जलहि विरह मसि छुवा। भूलहिं भंवर फिरहिं भा सुवा
जोवन चंद उवा जस विरह भयो संग राहु।
घटतहि घटत खीन भय कहे न पारों काहु॥
नयन जो चक्र फिरे चहुं ओरा। वरची धाय समाय न कोरा॥
कहेसि प्रेम उपजा जो बारी बांधि सत्तमन डोल न भारी॥
जेहि जिय मनहिं सत्त होय भारू। परे पहार न बांके वारू॥
सती जो जरी प्रेम पै लागी। जो सत हिये तो सीतल आगी॥
जोवन चांद जो चौदस करा। विरह की चिनगी सो पुनि जरा॥
पवन बन्धु सो जोगी जती। कामबंध सो कामिन सती॥
आव बसन्त फूल फुलवारी। देव वार सब जोहहिं वारी॥
तुम पुनि जाहु वसन्त ले पूज मनावहु देव।
जीव पाय जग जनम है पिय पाई की सेव॥
जबलग अवध आय नियराई। दिन जुग जुग विरहिनकहं जाई
नींद भूंख निस दिन गइ दोऊ। हिये मांझ जस कलपे कोऊ॥
रोम रोम जनु लागहिं चांटे। सूत सूत जनु बेधे कांटे॥
दगध कराह जरे जस घीऊ। वेग न आव मलयगिरि पीऊ॥
कौन देवकहं जाय पराओं। जेहि सुमेरु हिय लाय गिराओं॥
गुप्त जो फल सासहि परगटें। अब होय सुभ्र चहहिं हम घटें॥
भइ संजोग जुरा अस मरना। भूखहि गई भोगका करना॥
जोवन चंचल ढीठ है करे न कीजे काज।
धन कुलवंत जो कुल धरे की जीवम मन लाज॥

तेहिं वियोग हीरामन आवा। पदमावत जानहु जिव पावा॥
कण्ठ लगाय सुआ सों रोई। अधिक मोह जो मिले बिछोई॥
आग उठी दुख हिये गंभीरू। नयनहिं आय चुवा होय नीरू॥
रही रोय जब पदमिनि रानी। हंसि पूछहिं सब सखी सयानी॥
मिले रहस भा चाहै दूना। कित रोई जो मिले बिछूना॥
तेहिक उतर पदमावत कहा। बिछुर न दुख जो हियभर रहा॥
मिलत हिये आयी सुख भरा। वह दुख नयन नीर होय ढुरा॥

बिछुरंता जब भेंटै सो जानै जेहि नेह।
सकुख सुहेला उगवै दुःख भरै जिमि मेह॥

हीरामनसे मुलाकात।

पुनि रानी हंसि कुशले पूछा। कित गौ वनहि कै पिंजर छूछा॥
रानी तुम जुग जुग सुख पाटू। छाज न पंखी पिंजर ठाटू॥
जो भा पंख कहां थिर रहना। चाहै उड़ा पंख जो डहना॥
पिंजरमहं जो परेवा घेरा। आय मंजार कीन्ह तहं फेरा॥
दिवसक आय हाथपै मेला। तेहि डर बनो वास कहं खिला॥
तहां जाय व्याधे नर सांधा। छूट न जाय मींच कर बांधा॥
वे धर वेचा बाह्मन हाथा। जम्बूदीप गयौं तेहि साथा॥

तहां चित्र चित्तौरगढ़ चित्रसेनकर राज।
टीका दीन्ह पुत्रकहं आप लीन्ह शिवसाज।

बैठि जो राज पिताकर ठाऊं। राजा रतनसेन तेहि नाऊं॥
का बरनउं धन देस दुवारा। जहं अस नग उपजा उजियारा॥
धन माता औ पिता बखाना। जेहिके बंस अंस अस आना॥
लखन बतीसों कुल निरमला। बरनि न जाय रूप औ कला॥
वेहीं लीन्ह अहा अस भागू। चाहै सोने मिला सहागू॥
सनग देख इच्छा भइ मोरी। है यह रतन पदारथ जोरी॥
है ससि जोग यही पै भानू। तहं तुम्हार मैं कीन्ह बखानू॥

कहां रतन रतनागढ़ कंचन कहां सुमेर।
दैव जो जोरी दुहूं लिखी मिली सो कौनहि फेर॥

सुनिके बिरह-चिनग वह परी। रतन पाव जो कंचनकरी॥
कठिन प्रेम बिरहा दुख भारी। राज छांड़ि भा जोगि भिखारी॥
मालति लाग भंवर जस होय। होय बावर निसरा बुधि खोय॥
कहेसि पतंग होय रस लेऊं। सिंहलदीप जाय पद देऊं॥
पुनि वह कोउ न छांड़ अकेला। सोरह सहस कुंवर भय चेला॥
और गिनै को संग सहाई। महादेव मढ़ मेला जाई॥
सूरज पुरुख दरसनको तांई। चितवै चन्द चकोरकि नांई॥

तुम बारी रस जोग जेहिं कमलहि जस अरघान।
तस सूरज परकास कै भंवर मिलायो आन॥

हीरामन जो कही यहि बाता। सुनिके रतन पदारथ राता॥
जइस सुरज देख कै ओपा। तस भा बिरह काम दल कोपा॥
सुनिके जोगीकेर बखानू। पदमावत मन भा अभिमानू॥
कंचनकरी न कांचहि लोभा। जो नग जड़े होय तस सोभा॥

कंचन जो कसिये की ताता। तब जाने वह पीत कि राता॥
नग कर मर्म सो जड़िया जाना। जड़े जो अस नग देख बखाना॥
को अस हाथ सिंह मुख घाले। को यह बात पिताओं चाले॥

सरग इन्द्र डर कांपे वासुकि डरे पतार।
कहं अइस वर पृथ्वी मोहिं योग संसार॥

तुइं रानी ससि कंचन कला। वह नग रतन सूर निरमला॥
बिरह बिजाग बीज गा कोई। आग जो छुवै जाय जर सोई॥
आगि बुझाय धोय जल गाढ़े। वह न बुझाय आगि अति बाढ़े॥
बिरहकि आगि सूर जर कपा। रातहि दिवस जरे ओ तपा॥
खनहि सरग खन जाय पतारा। थिर न रहै यहि आग अपारा
धनि सो जीव दग्ध इमि सहा। अइस जरे दूसर नहिं कहा॥
सुलग सुलग भीतर होय श्यामा। प्रगट होय नहिं काढ़े नामा॥

काह कहों ओहोसों जों दुख कीन्ह निमेट।
तेहि दिन आग करों यह बाहर जेहि दिन होय सुभेट॥

सुना जो अस धन जारा कया। तन भा सांच नयन भामया॥
देखों जाय जरै जस भानू। कंचन जरै अधिक होय बानू॥
अब जी जरे सुप्रेम वियोगी। हत्या मोहिं जेहि कारन जोगी॥
हीरामन सो कही रस-बाता। सुनिकै रतन पदारथ राता॥
जोगी जोग संभारहि छाला। देहों भुगत देहों जेमाला॥
आव बसंत कुंसल सो पाऊं। पूजा मिस मंडपकहं आऊं॥
गुरुके बचन फूल हिय गाथे। देखों नयन चढ़ाऊं माथे॥

कमल बरन तुम बरना मैं माना पुनि भोय।
चांद सूरज कहं चाहौ जोरी सुरज वह होय॥

हीरामन जो कही रस बाता। पायो पान भयो मुख राता॥
चला सुवा तब रानी कहा। भा जो पराउ सो कैसे रहा॥
जो नित चले संवारहि पाखा। आज जो रहा कालहको राखा॥
न जनों आज कहां दिन उवा। आयहि मिलैं चलहि मिल सुवा॥
मिलकै बिछुर मरनकी आना। कत आयहु जो चलहि निदाना॥
एरानी जो रहतो रांधा। कैसे रहौं वचनकर बांधा॥
ताकर दीठि अइस तुमह सेवा। जैसे कुंजमन सेज परेवा॥

बसै मीन जल धरती अम्बा वर्ष अकास।
जो प्रीती पै दोउमहं अंत होहिं एक पास॥

आवा सुवा बैठि जहं जोगी। मारग नयन वियोग वियोगी॥
आय प्रेमरस कहा संदेसू। गोरख मिला मिला उपदेसू॥
तुमकहं गुरू मया बहु कीन्हा। कीन्ह अदेस आवकहं दीन्हा॥
सब्द एक होय कहा अकेला। गुरू जस भृंग पतंग जस चेला॥
भृंगी ओहि पंखपै लेई। एकहि बार चहै जिव देई॥
ताकहं गुरू मया भल कीन्हा। नव अवतार आन बहु दीन्हा॥
होय अमर अस मरकै जिया। भंवर कमल मिलकै मधु पिया॥

आवै ऋतु वसन्त जब तब मधुकर तब वास।
जोगी जोग जो इमि सहै सिद्ध समापत तास॥

वसन्तखण्ड।

दई दई करि सुरत गंवाइ। श्रीपंचमी पूजि तब आई॥
भयो हुलास नवल ऋतुमाहां। छन न सुहाय धूप औ छाहां॥
पदमावत सब सखी हंकारी। जनवंत सब सिंहलकी वारी॥
आज वसंत नवल ऋतुराजा। पंचम होय जगत सब साजा॥
नवल सिंगार वनाहत कीन्हा। सीस परासहिं सेंदुर दीन्हा॥
विकसे कमल फूल बहु वासा। भंवर आय लुब्धे चहुंपासा॥
पियर पात दुख भरे निपाते। सुख पलहा उपजी होय राते॥

अवधि आय सो पूजे जो इच्छा मन कीन्ह।
चलहु देव मढ़ गोहन चही सो पूजा दीन्ह॥

फिरे आन ऋतु बाजन बाजे। औ सिंगार बारहि सब साजे॥
कमल करी पदमावत रानी। होय मालति जानी विगसानी॥
तारामन्ड पहिर भल चोला। भरी सीस सब नखत अमोला॥
सखी कुमोद सहस दस संगा। सवै सुगन्ध चढ़ाये अंगा॥
सब राजा रायन की बारी। वरन वरन पहिरें सब सारी॥
सवै स्वरूप पदमिनी जाती। पान फूल सेंदुर सब राती॥
करें कलोल सुरंग रंगीली। औ चोवा चन्दन सब खीली॥

चहुं दिशि रही वासना फुलवारी अस फूल।
वे वसन्तसों फूली गा वसन्त वहिं भूल॥

भई अहा पदमावत चली। छत्तिस कुरि भइ गोहन भली ॥
भई गौरि संग पहिर पटोरा। ब्रह्मनि आय सहस अंग मोरा ॥
अगरवारि गजगवन करेई। वैसिनि पांव हंस गत देई ॥
चन्देलिनि ठमकहिं पग ढारा। चल चौहान होय झनकारा ॥
चली सुनारि सुहाग-सुहाती। औ कलवारि प्रेममधुमाती ॥
वानिन चली सिंदुर दिये मांगा। कैथिनि चली समाय न आंगा
पटयनि पहिरि सुरंग तन चोला। औ वरइनि मुख खात तमोला

चली पवन संग गोहन फूल-डार लिये हाथ।
विस्वनाथकी पूजा पदमावत के साथ ॥

ठठेरिन बहु ठाठर कीन्हा। चली अहीरिनि काजर दीन्हा ॥
गूजरि चली गोरसकी माती। बढ़यनि चली भागकी ताती ॥
चली लुहारिन वांके नयना। भाटिनि चली मधुर अति वयना ॥
गंधिनि चली सुगंध लगाये। छीपिनि चली सो चीर रंगाये ॥
रंगरेजिनि बहु राती सारी। चली जुगति सो नाउ निवारी ॥
मालिनि चली हार लिये गाथे। तेलिनि चली फुलायल माथे ॥
किये सिंगार बहु वेस्या चली। जहंलग मूंदी विकसी कली ॥

नटिनी डोमिनि ढारिनि सह नायनि परकार।
निरतत नाद विनोदसों विहंसत खेलत नार ॥

कमल सुभाय चली फुलवारी। फर फूलनकी इच्छा बारी ॥
आप आपमहं करहिं जोहारू। यह वसन्त सबकहं त्योहारू ॥
चहौ मनोरा झूमक होई। फर औ फूल लियो सब कोई ॥
फाग खेलि पुनि दाहब होली। सेतत खेह उड़ावब झोली ॥

आज छांड़ पुनि दिवस न दूजा। खेल वसन्त लेहु कै पूजा॥
भा आयसु पद्मावतकेरा। फेर न आय करव हम फेरा॥
तस हम कहं होय है रखवारी। पुनि हम कहां कहां यह वारी

पुनिरे चलव घर आपने पूज विसेसर देव।
जेहि को होय खेलना आज खेल हंस लेव॥

काहूं गही अम्ब की डारा। कोई विरह जम्बु अति छारा॥
कोइ नारंगकोइ झार चिरोंजी। कोइ कठहरवड़हरकोइ न्योजी॥
कोइ दाड़िम कोइ दाख खरेरी। कोइ सदाफर तुरंज जंभीरी॥
कोइ जैफर कोइ लौंग सुपारी। कोइ कमरख कोइ कोवा छारी॥
कोइ बिजोर कोइ नरियर चूरी। कोइ अमिली कोइ महुव खजूरी
कोइ हरफा कोइ चोर करौंदा। कोइ अनार कोइ वेरि कसौंदा
काहू गही केला को घौरी। काहू हाथ परी निमकौरी॥

काहू पाई नेरे काहूकहं गयी दूर।
काहू खेल भयो विष काहू अमिरत-मूर॥

पुनि बीनहिं सब फूल सहेली। जो जेहि आस पास सब वेली॥
कोइ क्योंड़ा कोइ चम्प नेवारी। कोइ केतकि मालति फुलवारी॥
कोइ सदवर्ग गोंद औ करना। कोइ चमेलि नागेसर वरना॥
कोइ सुगुलाव सुदरसन कूजा। कोइ सोनजर्द भल पूजा॥
कोइ सो बोलसर पुहुप वकोरी। कोई रूपमंजरि औ गोरी॥
कोइ सिंगारहार तेहि पाहां। कोइ सेवती कदमकी छाहां॥
कोइ चन्दन फूलहिं जनु फूली। कोइ अजान विरवातर भूली॥

कोइ फूल पाव कोइ पाती जेहिक हाथ जेहि आंट।
कोइ हार चीर उरझानो जहां छुवे तह कांट॥

फर फूलन सब डार भिराई। झुण्ड बांध के पंचम गाई॥
बाजत ढोल दुंद औ भेरें। मंदिर तूर झांझ चहुं फेरें॥
सींगि संख डफ संगम बाजे। बंसकार महुवर सुरसाजे॥
और कहा जित बाजन भले। भांति भांति सब बाजत चले॥
रथहिं चढ़ी सब रूप सुहाई। लिये बसन्त मढ़मंडप सिधाई॥
नवल बसन्त नवल वै बारी। सेंदुर बूका करें धमारी॥
खनहिं चलहिं खन चांचर होई। नाच कूद भूला सब कोई॥

सेंदुर खेह उठी तस गगन भयो तस रात।
राति सकल महि धरती राति बिरख बन पात॥

यहि विधि खेलत सिंहलरानी। महादेव मठ जाय तुलानी॥
सकल देवता देखन लागी। दीठि पाप सब उनके भागी॥
ये कैलास सुनें अपछरी। कहांते आय टूटि भुइं परी॥
कोई कहै पदमिनी आई। कोइ कह ससि औ नखत तराईं॥
कोई कहै फूली फुलवारी। फूली सबै देखके बारी॥
एक सरूप औ सेंदुर सारी। जानहु दिया सकल महि बारी॥
मुरछ परै जोई मुख जोहै। मानहुं मिरग दवारहिं मोहै॥

कोई परा भंवर होय बास लीन्ह जनु चांप।
कोइ पतंग भा दीपक कोइ अधजर तन कांप॥

पदमावत गइ देव दुवारा। भीतर मंडप कीन पैसारा॥
देवै संसय भा जिय केरा। भागों केहि दिस मंडप घेरा॥

एक जुहार कीन्ह औ दूजा। तिसरे आय चढ़ायसि पूजा॥
फर फूलन सब मंडप भरावा। चन्दन अगर देव अन्हवावा॥
भरि सेंदुर आगे भइ खरी। परसि देव पुनि पांयन परी॥
और सहेली सबै बिवाहीं। मोकहं देव कितहुं वर नाहीं॥
हौं निरगुन जें कीन्ह न सेवा। गुन निरगुन दाता तुम देवा॥

वर संजोग मोहिं मिरवहु कलस जातहौं मान।
जा दिन इच्छा पूजे वेग चढ़ाऊं आन॥

इच्छ इच्छ विनती जस जानी। पुनि कर जोरि ठाढ़ भइ रानी॥
उतर को देय देव सोगयो। शब्द कोट मण्डप महं भयो॥
काटि पयारा जइस परेवा। सो गयो ईश उतरको देवा॥
भयी जीव बिन नाउत ओझा। विख भइ पूरि कालि भयी गोझा॥
जो देखि जनु विखहर डसा। देख चरित पदमावत हंसा॥
भल हम आय मनावा देवा। गा जन सोय को मानै सेवा॥
को इच्छा पुरवै दुख-खोवा। जेहिं मन आय सो तन तन सोवा॥

चहुंदिस सखी उठावहिं सीस विकल नहिं डोल।
धर कोइ जीवन जानो मखरे बकत कुबोल॥

ततखन आय सखी वे हंसानी। कौतुक एक न देखहु रानी॥
पुरव द्दार मठ जोगी छाये। न जनो कौन देसते आये॥
जनु.उन जोग तन्त अब खिला। सिद्ध होय निसरे सब चेला॥
जनमहं जो एक गुरू कहावा। जस गुड़ दै काहू बौरावा॥
कुंवर बतीसो लच्छन राता। दसयें लखन कहे एक बाता॥

जानो थाहि गोपिचंद जोगी। की सु आय भरथरी वियोगी॥
वै पिंगल गयी कजरी-आरन। ये सिंहल सोवहिं केहि कारन॥

यह मूरत यह मुद्रा हम न देख अवधूत।
जानहुं होहिं न योगी कोइ राजाके पूत॥

सुनि सुबात रानी रथ चढ़ी। कहं अस जोगि जो देखों मढ़ी॥
ले संग सखी कीन्ह तहं फिरा। योगि आय जनु अछरहिं घेरा॥
नयन कचूर प्रेम-मधु भरे। भइ सुदीठि जोगी सो ढ़रे॥
योग-दीठो दीठी सों लीन्हा। नयन-रूप नयनहिं जिव दीन्हा॥
जो मधु छकत परा तेहि पाले। सुध न रही वहि एक पियाले॥
पड़ा मांत गोरख कर चेला। जिव तन छांड़ि सरगकहं खेला॥
किंगरी गही जो हुत वैरागी। मरती वार वही धुन लागी॥

जेहि धंध जाकर मन वसे सपने सूझ सुधन्ध।
तेहि कारन तपसी तप साधहिं करहिं प्रेम चित बंध॥

पद्मावत जस सुना बखानू। सहस किरा देखि तस भानू॥
मेलि सचन्दन मग खन जागा। अधिको सोत सीर तन लागा॥
तब चन्दन आखर हिय लिखो। भीख लई तुम जोग न सिखो॥
बार आय तब गा तुइं सोई। कैसे भुगति परापत होई॥
अब जो सूर अहे ससि राता। आयी चढ़ि सु गगन पुनि साता॥
लिख सो बात सखिन सो कहो। यही ठाउं हों बरित रहो॥
परगट हों तो होय अस भंगू। जगत-दियाकर होय पतंगू॥

जासों चख हेरों सोई ठांव जिव देय।
यह दुख कतहुं न निसरों को हत्या अस लेय॥

कीन्ह पयान सबहिं रथ हांका। परवत छांड़ सिंहलगढ़ ताका
बलि भयो सबै देवता बली। हत्यारिन हत्या ले चली॥
को अस हितू मुवे गहि बाहीं। जो पै जिय आपन तन नाहीं॥
जौलह जिव आपन सब कोई। बिन जिव कोइ न आपन होई॥
भाई बंधु औ मीत पियारा। बिन जिव घड़ी न राखे पारा॥
बिन जिव पिंड छार कर कूरा। छार मिलावै सो हित पूरा॥
तेहि जिव बिना अमर भा राजा। को उठि बैठि करब सो काजा

परि काया भुइं लोटै कहां रे जिव बलि भीव।
को उठाय बैठारे बाज पियारे जीव॥

पदमावत सो मंदिर पैठी। हंसत जाय सिंहासन बैठी॥
निस सोती सुनि कथा बहारी। भा बिहान सब सखी हंकारी॥
देव पूज जस आयों काली। सपन एक निस देख्यों आली॥
जनु ससि उदय पूरबदिस लीन्हा। औ रवि उदयपछिमदिसकीन्हा
पुनि चलि सूर चांदपहं आवा। चांद सूरज दुहुं भयो मिरावा॥
दिन औ रात जानहु भय एका। राम आय रावन गढ़ छेका॥
तस कुछ कहा न जाय निवेदा। अरजुन बान राहु को बेधा॥

जनहुं लङ्क सब लूसी हनू बिधांसी बार।
जाग उठ्यों अस देखत कहु सखि सपन-विचार॥

सखी सो बोली सपन विचारी। कालह जो गई देवकर बारी॥
पूजि मनायो बहुत बिनाती। परसन आय भयो तुम्ह राती॥
सूरज पुरुष चांद तुम रानी। अस वर देव मिलावै आनी॥
पछ खण्ड कर राजा कोई। सो आवै वर तुमकहं होई॥

कुछ पुनि जूझ लाग तुम रामा। रावन सेते होय संग्रामा॥
चांद सूरज सों होय बिवाहू। बार बिधां सब बेधै राहू॥
जस ऊषा कहं अनिरुध मिला। मेट न जाय लिखा परबला॥

सुख सुहाग है तुमकहं पान फूल रस भोग।
आज काल्ह भा चहै अस सपनेका संजोग॥

रतनसेनका सतीखण्ड।

किधी बसत पद्‌मावत गई। राजा तव बसन्त सुध भई॥
जो जागा न बसन्त न बारी। ना सो खिल न खिलनहारी॥
ना वहिं की वह रूप सुहाई। गइ हिराइ पुनि दीठि न आई॥
फूल झड़ी सूखो फुलवारी। दीठि परी उकटी सब छारी॥
कें यह बसत बसन्त उजारा। गा सो चांद अथवा ले तारा॥
अब तेहिबिन जग भा अंधि कूपा। वह सुख छांह जरा दुख-धूपा
बिरह-दवां को जरत सिरावा। को पीतम सो करे मिलावा॥

हिये देख जो चन्दन मिलके लिखा विछोह।
हाथ मींज सिर धुन रीवे जो निचिंत अस सोय॥

जस विछोह जलमीन दुहेला। जल हति काढ़ अगिनमहं मेला
चन्दन अंक दाग होय परे। बुझहिं न ते आखर पर जरे॥
जेहि सिर आगी होय होय लागी। सब तन दाग सिंह वन दागी
जरे मिरग-बनखंड वह ज्वाला। औ तौ जरहि वैठि तेहि छाला

कित ते अंक लिखि जहं सोवा। मग अंकित तेहि करत विछोवा॥
जैसे दुखित कंसा कोतला। माधौनलहि काम कंदला॥
भयो अंक नल जइस दमावत। नयना मूंद छिपी पदमावत॥

आय वसन्ता छिप रहा होय फूलन की भेस।
केहि विधि पाऊं भंवर होय कवन करों उपदेस॥

रोवत रतन माल जनु चूरा। जहं होय ठाढ़ होय तहं कूरा॥
कहां वसन्त सो कोकिल-वयना। कहां कुसुम अलि बेधो नयना॥
कहां सुमूरति परी जो डीठी। काढ़ि लिहेसि जिव हिरदै पैठी
कहंसो दरस परस जेहि लहा। जो सु वसन्त करीलहि कहा॥
पात विछोह रूख जो फूला। सो महुवा रोवै अस भूला॥
टपकहिं महुव आंसु तस परहीं। होय महुवा वसन्त ज्यों झरहीं
मोर वसन्त सो पदमिन नारी। जेहि बिन भयो वसन्त उजारी॥

पावा नवल वसन्त पुनि बहु आरत बहु चोप।
अइस न जाना अन्त होय पात झरहिं होय कोप॥

अहो महा विस्वासी देवा। कित मैं आय कीन्ह तू सेवा॥
आपन नाव चढ़े जो देई। सो तो पार उतारे खेई॥
सुफल जानि पग टेक्यों तोरा। सुवाक सेमर तू भा मोरा॥
पाहन चढ़ि जो चहि भा पारा। सो ऐसे बूड़े मंझधारा॥
पाहन सेवा कहां पसीजा। जनम न पलवै जो जल भीजा॥
वावर सोई सुपाहन पूजा। सकतको भार लई सिर दूजा॥
काहे न पूजे सोई निरासा। मुये जीत मन जाकर आसा॥

सिंह तरेंदाजेहिं गहा पार भयी ते साथ।
ते पै बूड़े बारहिं बेंड़ पूछ जेहि हाथ॥

देव कहा सुनि बौरे राजा। देवहि अगमन मारा गाजा॥
जो पहिले अपने सिर परी। सो का काहुक धरधर करी॥
पद्मावत राजाकी बारी। आय सखिन सो मंडप उघारी॥
जैस चांद गोहन सब तारा। परों भुलाय देख उजियारा॥
चमके दसन बीजकी नाईं। नयन चक्र चमकात भवाईं॥
हौं तेहि दीप पतंग होय परा। जिव जिमि काढ़ सरग ले धरा॥
फेर न जाना वहं का भई। वहं कैलास कि कहं अपसई॥

अबहूं मरों निसासी हियै न आवै सांस।
रुगियाकी को चालै वै दहि जहां उपास॥

अनहों दोष देउं का काहू। सुनिकै कथा मया नहिं ताहू॥
हितू पियारा मीत बिछोई। साथ न लाग आप गा खोई॥
कामैं कीन्ह जो काया पोषो। दोष न मोहिं आप निरदोषो॥
फाग वसन्त खेल गइ गोरी। मोहि तन लाग आग जस होरी॥
अब अस काहि छार सिर मेलों। छारे हनों फाग तस खेलों॥
कित तप कीन्ह छांड़िकै राजू। आहुर गयौं न भा सिधि काजू॥
पायों न होई जोगी जती। अवसर चढ़ों जगें जस सती॥

आयी पीतम फिर गयी मिला न आय वसन्त।
अब तन होरी लायकै जार करों भसमन्त॥

सुकनों पंख जइस सरि साजा। तस सरि बैठि जरा चहि राजा॥
सकल देवता आय तुलाने। वहिं कस होय देव-अस्थाने॥

विरह अगिनि बजांग असूझा। जरै सूर न बुझाये बूझा॥
तेहिक जरत जो उठै बिजागी। तीनों लोक जरहिं तेहि लागी॥
अब को धरी चिनग तेहिं छूटी। जरहिं पहाड़ पहन सब फूटी॥
देवता सबै भसम होय जाहीं। छार समेटि पावत नाहीं॥
धरती सरग होय सब ताता। है कोई यहि राखि बिधाता॥
मुहमद चिनग पेम सुनि गगन औ महौ डिराय॥
धन बिरहिन औ धन हिया जहं यह अगिन समाय॥
हनुमत बीर लंक जे जारी। परबत उही अहा रखवारी॥
बैठि तहां भा लंका ताका। छठयें मास वही उठ हांका॥
तेहिकी आग वहू पुनि जरा। लंका छांड़ि पलंका परा॥
तहां जाय यह कहा संदेसू। पारबती औ जहां महेसू॥
जोगी आय बियोगी कोई। तुम्हरे मंडफ आग तेहि बोई॥
जरी लंगूर सुराती उहां। निकस जो भाग भये करमुहां॥
तेहिं बजांग जरेहों लागा। बजरङ्गी जर उठाती भागा॥
रावन लंका मैं दही वै मोहिं डाढ़ी आय
गगन पहाड़ होत है रावट को राखि गहि पांय॥

पार्बतीमहेशखण्ड।

ततखन पहुंचे आय महेसू। बाहन बैल कुष्टिकर भेसू॥
कांथर कथा हंड़ावर बांधे। मुंडमाल औ जनेउ कांधे॥
शेषनाग सो है कंठमाला। तन बिभूति हस्तीकर छाला॥

पहुंचे रुद्र कमलकी कटा। ससि माथे औ सिरपर जटा॥
चंवर घंट औ डमरू हाथा। गौरा पारबती धनि साथा॥
औ हनुमन्त बीर संग आवा। धरे भेष जनु बन्दर-छावा॥
औ तेहिकहि ननलावहु आगी। ताकर सपथ जरहि जेहि लागी

कौ तप करे न पारहि को रिनसायहि योग।
जियत जीव कस काढ़ेसि कहो सो मोसों वियोग॥

कहेसि को मोहिं बातहि बिलंभावा। हत्याकेर न तोहि डिरावा
जरे दुहु दुख जरौं अपारा। निसितिर परौं जाय यकबारा॥
जस भरथरी लाग पिंगला। मोकहं पद्मावत सिंगला॥
मैं पुनि तजा राज औ भोगू। मुनि सुनाउं कीन्हों तप जोगू॥
यहि मठ सेयों आय निरासा। को सुपूज मन पूज न आसा॥
तै यह जिव डाढ़े परदाधा। आधा निकस रहा घट आधा॥
जो अधिजरसों विलंब न लावा। करत बिलम्ब बहुत दुखपावा॥

एतना बोल कहत मुख उठी बिरहकी आग।
जो महेश नहिं अमी बुझावत सकल जगत हत लाग॥

पारबती मन उपजा चाऊ। देखो कुंवरकेर सत भाऊ॥
वहिं यह बीच कि प्रेमहि पूजा। तन मन एक कि मारग दूजा॥
भइ सरूप जानहु अपछरा। बिहंसि कुंवरकर आंचर धरा॥
सुनौं कुंवर मोसों एक वाता॥ जस रंग मोर न दूसर राता॥
ओ विधि रूप दीन्ह है तोका। उठा सु सब्द जाय शिवलोका॥
तब हों तोकहं इन्द्र पठाई। को पद्मी न तुई अपछर पाई॥
अब तजि जरन भरन तप जोगू। मोसो मानि जन्मभर भोगू॥

हौं अपछर कैलासको जेहि सर पूज न कोय।
मो तजि संवर जो वह मरिस कौर लाभ तेहि होय॥
भलहिं रंग तुहि अपछर राता। मोहिं दूसर सो भाव न बाता॥
मोहिं वह संवरि मुयी अस लहा। नयन जो देखिसि पूंछसि कहा
अवहिं ताहि जिव दियी न पावा। तेहि अस अपछर ठाढ़ मनावा
जो जिव देहौं वहकी आसा। न जनों काह होय कैलासा॥
हौं कैलास काहि लैं करौं। सो कैलास लाग जेहि मरौं॥
वहि की वार जोव निरबारौं। सिर उतार न्योछावर डारौं॥
ताकर चाह कहै जो आई। दोउ जगत तेहि देउं बड़ाई॥
वह न मोर कुछ आसा हौं वह आस करेउं॥
तेहि निरास प्रीतमकहं जिव न देउं का देउं॥
गौरी हंसि महेससों कहा। निहचै-यहि विरहानल दहा॥
निहचै-यहि वह कारन तपा। प्रवल प्रेम नहिं आछै छिपा॥
निश्चै प्रेम पीर यहि जागा। कसें कसौटी कंचन लागा॥
बदन पियर जल टपकै नयना। परगट दोउ प्रेमके बयना॥
यहि वह जन्म लागके सीझा। चही न औरहि ओही रीझा॥
महादेव देवन के पिता। तुमहरे सरन राम रनजिता॥
यीहूंकहं तस मया करेहु। पुरवहु आस कि हत्या लेहु॥
हत्या चढ़ायहि कांध दुइ औ तिनके अपराध।
तिसरे लेहु कि माथे जोरि लियि किधि साध॥
सुनि कें महादेवको भाखा। सिद्ध पुरुष राजें मन लाखा॥
सिद्धहि अंग न वैठे माखी। सिद्ध पलक नहिं लावहिं आंखी॥

सिद्धहि अंग होय नहिं छाया । सिद्ध होय नहिं भूख न माया ॥
जो जग सिद्धि गुसांई कीन्हा । परगट गुप्त रहै को चीन्हा ॥
बैल चढ़ा कुष्ठी कर भेसू । कहि राजा सत आहि महेसू ॥
चीन्हे सोइ रहै तेहि खोजा । जस विक्रम औ राजा भोजा ॥
कै जिवतन्त मन्त सौं हेरा । गयो हिराय जो वह भा मेरा ॥

बिन गुरु पन्थ न पावै भूला सोइ जो मेट ।
जोगी सिद्ध होय तब जब गोरखसौं भेट ॥

ततखन रतनसेन घावरा । छांड़ि डफार पांय लै परा ॥
माता पिता जन्म कित पाला । जो अस फांद प्रेम गैं घाला ॥
धरती सरग मिले हत दोऊ । कित निरार कर दीन्ह बिछोऊ ॥
पदक पदारथ कर हुत खोवा । टूटहिं रतन रतन तस रोवा ॥
गगन मेघ जस बरखहिं भली । धर्त्तीपूर सलिल होय चली ॥
सायर उबट सिखिरको पाटी । चढ़ी पानि पाहन हिय फाटी ॥
बूंद पानि होय होय सब गिरै । प्रेम-फन्द कोऊ जन परै ॥

तस रोवै जस जिव जरै गिरै रकत औ मांस ।
रोम रोम सब रोवहिं सूत सूत भर आंस ॥

रोवत बूड़ उठा संसारू । महादेव तब भयो मयारू ॥
कहसि न रोव बहुत तैं रोवा । अब ईश्वर भा दारिद खोवा ॥
जो दुख सहै होय सुख ओका । दुख बिन सुख न जाय सिवलोका
अब तू सिद्ध भया सुख पाई । दर्पन कया छूटि गइ काई ॥
कहूं बात अबहूं उपदेसी । लाग पंथ भूले परदेसी ॥

जौ लहि चोर सेंध नहिं देई। राजा कैर न मूसे पेई॥
चढ़े तो जाय पार वह खंदी। परे तो सेंध सीससों मूंदी॥
कहूं तोहिं सिंहल गढ़हि है खंड सात चढ़ाव।
फिरा न कोई जियत जिय सरग पंथ दे पांव॥
गढ़ तस बांक जैस तो काया। पुरुष देखि ओहीकी छाया॥
पाई नाहिं जूझ हठ कीन्हे। जें पावा तें आपहिं चीन्हे॥
नौ पंवरी ते गढ़ मझियारा। औ तहं फिरहिं पांच कुतवारा॥
दशों दुआर गुपत एक नाके। अगम चढ़ाव बाट सुठ बांके॥
भेदी जाय कोई वह घांटी। जौ लहि भेद चढ़े होय चांटी॥
गढ़ तरि कुण्ड सुरंग तेहि माहां। ते वै पंथ कहों तोहि पाहां॥
चोर पैठि जस सेंध संवारी। जुवा पैत जस लाय जुवारी॥
जस मरजिया समुद धस मारे हाथ आव तस सीप।
ढूंढि लेहु जो स्वर्ग दुआरे चढ़े सो सिंहलदीप॥
दशों दुवार तालका लेखा। उलट दीठि जो लाव सो देखा॥
जाय सो जाय स्वास मन बन्दी। जस धसि लीन्ह कान्ह कालिन्दी
तू मन माथ मारके स्वासा। जो पै मरहि आप कर नासा॥
परगट लोकचार कहुं वाता। गुप्त लाव मन जासों राता॥
होहुं कहत सबै मति खोई। जो तू नाहिं आहि सब कोई॥
जीतहि जरी मरे इक वारा। पुनि को मीच मरे को पारा॥
आपहिं गुरूसो आपहिं चेला। आपहिं सब औ आप अकेला॥
आपहिं जीवन मरन पुनि आपै तन मन सोय।
आपहिं आप करे जो चाहै कहां सो दूसर कोय॥

राजाका गढ़पर चढ़ना।

सिधि गुटका राजें जो पावा। औ भइ सिद्धि गनेस मनावा॥
जब संकर सिधि दीन्ह कुटेका। परी हूल जोगिन गढ़ छेका॥
सबै पदमिनी देखहिं चढ़ी। सिंहल घेर गंई उठि मढ़ी॥
जस घर फिरा चोर मत कीन्हा। तेहि बिधिसेंध चाहि गढ़दीन्हा
गुप्त चोर जो रहै सो सांचा। परगट होय जीव नहिं बांचा॥
पंवर पंवर गढ़ लाग केवारा। औ राजासों भई पुकारा॥
जोगी आय छेंक गढ़ मेली। न जनों कौन देसकहं खेली॥
भयो रजायसु देखो को भिखार अस ढीठ।
बेग बरज तेहि आवहिं जनु दुइ चार बसीठ॥
उतर बसीठ दुइ आय जुहारी। की तुम जोगी की बनजारी॥
भयो रजायसु आगें खेलहिं। गढ़ तरु छांड़ि अंत होय मेलहिं॥
अस लागहि केहिके सिख दीन्हें। आयहि मरहि हाथजिवलीन्हें
यहां इंद्रासन राजा तपा। जाहि डिराय सूर डर छिपा॥
हो बनजार तो बनज बिसाहो। भर ब्योपार लेहु जो चाहो॥
जोगी होहु तो जुगतिसों मांगहु। भुगति लेहु ले मारग लागहु
यहां देवता आसके हारी। तुम पतंग को आहि भिखारी॥
तुम जोगी बैरागी कहत न मानी कोइ।
लेहु मांग कुछ भिच्छा खेल अंत कहं होइ॥
आन जो भीख हों आयों लिये। कस न लेउं जो राजा दिये॥
पदमावत राजा की बारी। हों जोगी वह लागि भिखारी॥

खप्पर लिये बार भा मांगों। भुगति देइ ले मारग लागों॥
सोई भुगति परापत पूजा। कहां जाउं अस बार न दूजा॥
अब धर यहां जीव वह ठाउं। भस्म होइं पै तजों न नाउं॥
जस बिन प्रान पिंड है छूंछा। धरम लाग कहिये जो पूंछा॥
तुम सो बसीठ राजा की ओरा। साख होहु यह भीख निहोरा॥

जोगी बार आव सो जेहि भिच्छाकी आस।
जो निरास दृढ़ आसन कित गवने केहि पास॥

सुनि बसीठ मन अपने रिसा। जौ पीसत घुन जायहि पिसा॥
जोगी अइस कहै नहिं कोई। सो कहु बात जोग तेहि होई॥
वह वड़ राज इन्द्रकर पाटा। धरती परे सरग को चाटा॥
जो यह बात जाय तहं चली। छूटहिं अबहिं हस्ति सिंहली॥
औ छूटहिं तहं वज्र के कूटा। विसरे भुगत होय सब खूंटा॥
जहंलग दीठि न जाय पसारी। तहां पसारसि हाथ भिखारी॥
आगी देखि पांव धरि नाथा। तहां न देखि टूटि जहं माथा॥

वह रानी जेहि जुगतमहं तेही राज औ पाट।
सुन्दर जाय राजघर जोगिहि बंदर काट॥

जो जोगी सत बंदर काटा। एकै जोग न दूसर बाटा॥
और साधना आवै साधे। जोग साधना आपहिं दाधे॥
सर पहुंचाउ जोगकर साथू। दीठि चाहि अगमन होय हाथू॥
तुम्हरे जोर सिंहलके हाथी। हमरे हस्ति गुरू है साथी॥
हस्त नेस्त वह करत न वारा। परबत करै पांवकी छारा॥

जोर गिरे गढ़ जनवंत भयी। जो गढ़ गरब करहिं ते नयी॥
अन्त जो चलना कोउ न चीन्हा। जो आवा ओ आपन कीन्हा॥

जोगिहि कोह न चाही तब न मोहि रिस लाग।
जोग-तन्त ज्यों पानी काहि करे तेहि आग॥

वसिठहिं जाय कही सब बाता। राजा सुनत कोह भा राता॥
ठांवहिं ठांव कुंवर सब भाखि। के अवलहिं थे जोगी राखि॥
अबहूं वेगहि करो संजोज। तस मारहु हत्या किन होज॥
मन्त्रिन कहा रहो मन बूझे। पति न होय जोगिहि सों जझे॥
वे मारे तौ काह भिखारी। लाज होय जो मानी हारी॥
ना भल मुये न मारे मोखू। दुहूं बात तुम्ह लागहि दोखू॥
रहे देहु जो गढ़तर मेली। जोगी कित आछे पुनि खेली॥

आछे देहु जो गढ़तरे जनि चालहु यह बात।
नितहिं जो पाहन भख करहिं अस केहि के मुख दांत॥

गयी वसीठ पुनि बहुर न आयी। राजें कहा बहुत दिन लायी॥
न जनों सरग बात धों काहा। काहु न आय कही फिर चाहा॥
पंख न काया पवन न पाया। केहि विधि मिलों होउं केहि छाया
कुंवर रकत नयनहि भर चुवा। रोय हंकारेसि मांझी सुवा॥
परी जो आंसु रकत की टूटी। रेंग चली जस वीरबहूटी॥
वही रकत लिख दीन्हीं पाती। सुवा जो लीन्ह चोंच भइ राती॥
बांधी कंठ परा जस कांथा। विरहिक जरा जाय कहं नाथा॥

मसि नयना लिखनी वरुनि रोय रोय लिखा अकत्थ।
आखर दहे न कोई छुवै दीन्ह परेवा हत्थ॥

औ मुख वचन सो कहेसि परेवा। पहिले मोर बहुतकी सेवा॥
पुनि रे संवार कहेसि अस दूजी। जेइ बल दीन्ह देवतन पूजी॥
सो अबहीं तबसे बल लागा। बल जिव रहा न तन सो जागा॥
भलहि ईसहू तुम्ह बल दीन्हा। जहं तुम्ह तहां भाव बलकीन्हा
जो तुम मया कीन्ह पग धारा। दीठि दिखाय बान विष मारा॥
जो अस जाकर आसामुखी। दुखमहं एसन मारे दुखी॥
नयन भिखारि न मानहिं सीखा अगमन दौरे लीन्ह पै भीखा॥

नयनहिं नयन जो बिध गये नहिं निकसें वै बान।
हिये जो आखर तुम लिखौ ते सठ घटहिं परान॥

ते विष-बान लिखों कहंताई। रकत जो चुवा भीज दुनियाई॥
जान सुकारी रकत पसेज। सुखी न जान दुखीकर भेज॥
गिन न पीर तिन काकर चिंता। पीतम निठुर होहिं अस निन्ता
कासों कहों विरहकी भाखा। जासों कहों होय जरि राखा॥
विरह आग तन जरमें जरे। नयन नीर सायर सब भरे॥
पाती लिखी सुमिरि तुम नामा। रकत लिखि आखर भयी स्यामा
आखर जरहिं न कोई छुआ। तब दुख देख चला ले सुआ॥

अब सठमरों छंछि गइ पाती प्रेम पियारे हाथ।
भेंट होत दुख रोय सुनावत जीव जात जो साथ॥

कंचन तार बांध गयें पाती। ले गा सुआ जहां धन राती॥
जैसे कमल सूरजकी आसा। तीर कंथ बहु मर पियासा॥
विसरा भोग ्ज सुख वासू। जहां भंवर सब तहां हुलासू॥
तबलगि धीर सुना नहिं पीजा। सुना तो धीरो रहै नहिं जी॥

तबलग सुखहिय प्रेम न जामा। जहां प्रेमका सुख विसरामा॥
अगर चंदन दुख दहै सरीरू। औ भा अगिन कयाकर चीरू॥
कथा कहानी सुनि सठ जरा। जानो घीव बसन्दर परा॥

विरहिनि आप संभारे मैल चीर शिर रूख।
पिउ पिउ करत रात दिन पपिहा मुख भै सूख॥

ततखन गा हीरामन आई। मरत पियास छांह जनु पाई॥
भल तुम सुआ कीन्ह है फेरा। गाढ़ न जानहु पीतमकेरा॥
बातहिं जानो विषम पहारा। हिरदा मिला न होय निरारा॥
मरम पानिकर जानि पियासा। जो जलमहं ताकहं का आसा॥
का रानी यहि पूंछहु बाता। जन कोइ होय प्रेमकर राता॥
तुम्हरे दरसन लाग वियोगी। अहा सो महादेव मठ जोगी॥
तुम वसंत लै तहां सिधाई। देव पूज पुनि औ फिर आई॥

दीठि-बान तस मारेहु खाय रहा तेहि ठांव।
दूसर बार न बोलहि लै पदमावत नांव॥

रोमै रोम वान वै फूटी। सूतहिं सूत रुधिर मुख छूटी॥
नयनहि चली रकतकी धारा। कन्था भीज भयो रतनारा॥
सूरज बूड़ उठा परभाता। औ मजीठ टेसू बन राता॥
भयो वसंत राती वंसपती। औ जतने सब जोगी जती॥
भूमि जो भीज भयो सब गेरू। औ राती तहं पंखि पखेरू॥
राती सती अगिन सब काया। गगन मेघ राती तहं छाया॥
ईंगुर भा पहाड़ जो भीजा। पै तुम्हार नहिं रोम पसीजा॥

तहं चकोर औ कोकिल भया तेहि हिये पईठ।
नयनन रकत भरा यहि तुम फिर कीन्ह न डीठ॥
अइस वसन्त तुमहिं पै खिलह्न। रकत परायी सेंदुर मेलह्न॥
तुम तो खिल-मंदिरकहं आईं। वहिका मरम जस जान गुसाईं॥
कहेसि मरे को वारहि वारा। एकहि वार होउं जरि छारा॥
सर रचि चहा आग जो लाई। महादेव गौरी सुधि पाई॥
आय बुझाय दीन्ह पंथ तहां। मरन खिलकर आगम जहां॥
उलटा पंथ प्रेमको वारा। चढ़े सरग जो परे पतारा॥
अब धस लीन्ह चहो तेहि आसा। पावै सांस कि मरे निरासा॥
पाती लिख सो पठाई लिखा सबै दुख रोय।
धौं जिव रहै कि निसरै कहा रजायसु होय॥
कहिकै सुवा छोड़ दइ पाती। जानह्न दव्व छूट तस ताती॥
गैउं जो बांधा कंचन तागा। राती स्याम कंठ जर लागा॥
अगिन खास मुख निसरै ताती। तरवर जरहिं तहां को पाति॥
रोय रोय सुवै कही सो बाता। रकतकि आंसु भयो मुख राता॥
देख कण्ठ जर लाग सो केरा। सो कसजरै विरह अस घेरा॥
जर जर हाड़ भये सब चूना। तहां मांसको रकत बह्नना॥
वैं तोहि लाग कया सब जारो। तपत मीन जल रहै न पारो॥
तुहि कारन वह जोगी भस्म कीन्ह तन दाह।
तू अस निठुर निछोही बात न पूछौ ताह॥
कहेसि सुआ मोसो सुनि बाता। चहौं तो आज मिलौं जस राता
प सो मरम न जानै मोरा। जानै मरम जो मरकै होरा॥

हौं जानतहौं अबहूं कांचा। ना जेहि प्रीतिरंग थिर रांचा॥
ना जेहि भयो मलयगिरिवासा। ना जेहि रवि होयचढ़ेउअकासा
ना जेहि होय भंवरकर रंगू। ना जेहि दीपक भयो पतंगू॥
ना जेहि किरा भंग की होई। ना जेहि आप जिये मर सोई॥
ना जेहि प्रेम औट दूक भयो। ना जेहि हिये मांझ डर गयो॥

तेहिंका का कहिये रहन जो है पीतम लाग।
जो वह सुने लेइ धस का पानी का आग॥

पुनि धनि कनक वान मसि मांगी। उत्तर लिखत भीज तन आंगी
तस कंचन कहं चही सुहागा। जो निरमल नग होय सुलागा॥
हौं जोगी मठ मंडफ वहोरी। तहवां कसन गांठ तुम जोरी॥
गा बिष भार देखके नयना। सखिन लाज का बोलौं बयना॥
खेल मिसें म चन्दन घाला। मग जागेसि तो देवौं जैमाला॥
तवहूं न जागा गा तू सोई। जागे भेट न सोये होई॥
अब ससि होय चढ़े आकासा। जो जिव देय सो आवै पासा॥

तब लगि भुगति न ले सका रावन सिय दूक साथ॥
कौन भरोसे अब कहौं जीव पराये हाथ।

अब जो सूर गगन चढ़ि आवै। राहु होय तौ ससिकहं पावै॥
बहुतेहिं अइस जीवपर खेला। तू जोगी किनमाहं अकेला॥
बिक्रम धसा प्रेमके बारा। चम्पावत कहं गयो पतारा॥
सुदीपच्छ खंड रावत लागी। गगन पूर होय गा वैरागी॥
राजकंवर कंचनपुर गयो। मिरगावत कहं जोगी भयो॥

साधु कुंवर खण्डावत जोगू। मधु मालतिकहं कीन्ह वियोगू॥
प्रेमावत कैसुरसर सांधा। ऊषालगि अनिरुध बर बांधा॥

हौं रानी पदमावत सात सरगपर वास।
हाथ चढ़ौं सो तेहिंके प्रथम करै अपनास॥

हौं पुनि अहौं ऐस तुम राती। आधी भेट पिरीतम पाती॥
तोहूं जो प्रीति निवाहै आंटा। भंवर न देख केतमहं कांटा॥
होइ पतंग आव गहु दिया। लेहु समुद धस होय मरजिया॥
रात रंग जिमि दीपक बाती। नयन लाव होय सीप सेवाती॥
चात्रिक होइ पुकार पियासा। पियो न पानि स्वातिकी आसा॥
सारसहो बिछुरी जस जोरी। रयनि होय जल चकइ चकोरी॥
होइ चकोर दीठि ससि पाहां। औ रवि होइ कमल वह माहां

होंइ ऐस तुहि राती सकेसि तो प्रीति निवाह।
राहु वेध अरजुन होय जीत दुरपदी व्याह॥

राजा यहां तैस तप भूरा। भा जर विरह छारकर कूरा॥
जिव गंवायसो गयो विमोही। भावि न जिव जिव दीन्हेसि ओही
कहां पिंगला सुखमन नारी। सुन्न समाध लाग गइ तारी॥
बूंद समुद जैसो हो मेरा।. गा हेराय तस मिले न हेरा॥
रंगहि पान मिला जस होई। आपहिं खोय रहा होय सोई॥
सुवै आय देखा मा नासू। नयन रकत भर आयी आंसू॥
सदा प्रीतिमहं गाढ़ करेई। वह न भूल भूला जिव देई॥

मूर सजीवन आनके औ मुख छिरका नीर।
गरुड़ पंख जस झारे अमिरत वरसा कीर॥

सुआ जिया अस बास जो पावा। लीन्हेसि सांस पेट जिव आवा ॥
देखिसि जाग सुवा सिर नावा। पाति दीन्ह मुख वचन सुनावा ॥
सब्द सुनाय अमी मुख मेला। गुरू बुलाय वेग चल चेला ॥
तोहि अलि कीन्ह आप भा केंवा। हौं पठवा गुरु बीच परेवा ॥
पवन सांस तोसों मन लाई। जोवै मारग दीठि विछाई ॥
जस तुम काया कीन्हीं दाहू। सो सब गुरुकहं भयो अगाहू ॥
तपावंत छाला लिख दीन्हा। वेग चलाव चहूं सिधि कीन्हा ॥

वेगि चल आवो अस कहेउ जीव बसे तुम नाउं।
नयनहि भीतर पन्थ है हिरदा-भीतर ठाउं ॥

सुनि पदमावत की अस मया। भा बसन्त उपजी नइ कया ॥
सुआक बोल पवन होय लागा। उठा सोय हनुमत होय जागा ॥
चांद मिलनकहं दीन्हसि आसा। सहस किरन सूरज परकासा ॥
पाति लीन्ह ले सीस चढ़ावा। दीठि चकोर चांद जस पावा ॥
आस पियासा जो जेहि केरा। जो झिझकार वही सो हेरा ॥
अब यहि कौन पानि मैं पिया। भै तन पांख पतंग मरजिया ॥
उठा फूल हिरदै न समाना। कन्था टूक टूक भर आना ॥

जहां पिरीतम वै बसहिं यहि जिव बलि तेहि वाट।
जो सो बुलावै पांव सों हम तहं चलैं ललाट ॥

जो पथ मिला महेसहि सेई। गयो समुद ओही धस लेई ॥
जहं वह्न कुण्ड विसम औगाहा। जाय परा तहं पाव न थाहा ॥
बावर अन्ध प्रेमकर लागू। सौंह धसा कुछ सूजन आगू ॥
लीन्हेसि धस जो सांस मन मारा। गुरू मुछन्दरनाथ संभारा ॥

चेला परी न छांड़हि पाछू। चेला मच्छ गुरू जस काछू॥
जस धस लीन्ह समुद मरजिया। उघरे नयन बरे जस दिया॥
खोज लीन्ह सो सरग दुवारा। वज्र जो मूंदि जाय उघारा॥

बांक चढ़ाय सरग गढ़ चढ़व गयो होय भोर।
भइ पुकार गढ़ ऊपर चढ़े सेंध दे चोर॥

राजैं सुनि जोगी गढ़ चढ़े। पूंछी पास पंडित जो पढ़े॥
जोगी गढ़ जो सेंध दे आवहिं। बोलहु सब्द सुद्ध जस पावहिं॥
कहहिं वेद पंडित पढ़ वेदी। जोग भंवर जस मालति भेदी॥
जैसे चोर सेंध सिर मेलहिं। तस दी दोउ जीव पर खेलहिं॥
पथ नहिं चलहिं वेद जस लिखो। सरग जाय सूली चढ सिखो॥
चोर होय सूली पर मोख। देइ जो सूरी तेहि नहिं दोखू॥
चोर पुकार वेध घर मूसा। खोल राज-भंडार मंजूसा॥

जस यहि राजमंदिरकहं दीन्ह रयन होय सेंध।
तैसो इन्ह कहं मोष होय मारहु सूली वेध॥

मन्त्रीखण्ड।

राध जो मन्त्री बोले सोई। ऐस जो चोर सिद्ध पै कोई॥
सिद्ध निसङ्क रयन दिन भोहीं। ताका जहां तहां अपसोहीं॥
सिद्ध निडर पै अपने जीवा। सरग देख वौ नावहि ग्रीवा॥

सिद्ध जाय पै जिव वध तहां । औरहिं मरन पंख अस कहां ॥
सिद्ध अमर काया जस पारा । जरहिं मरहिं पर जाय न मारा ॥
चढ़ा जो कोप गगन उपराहीं । थोरे साज मरे ते नाहीं ॥
जम्बुक जूझ चढ़े जो राजा । सिंह साजके चढ़े सो छाजा ॥

छरहि काज कृष्ण कर साजा राजा चढ़े रिसाय ।
सिद्ध गिद्ध जहं दीठि गगनमहं बिन छर कुछ न बिसाय ॥

आवहु करहु कटर मस साजू । चढ़हिं बजाय जहां लगि राजू ॥
होइ संजोवल कुंवर जो भोगी । सब दल छेंक धरहु अब जोगी ॥
चौबिस लाख छत्रपति साजे । छपन कोटि दर बाजन बाजे ॥
बाइस सहस सिंहली चाले । गिरि पहाड़ पेई सब हाले ॥
जगत बराबर वै सब चांपा । डरा इन्द्र वासुकि हिय कांपा ॥
पदम कोटि रथ साजे आवहिं । गढ़ होय खिह गगनकहं धावहिं
जनु भौचाल जगत महं परा । कुम्भहि पीठ टूटि हिय डरा ॥

छत्रहि सरग छायगा सूरज भयो अलोप ।
दिनहि रात अस देखौ चढ़ा इन्द्र होय कोप ॥

देख कटक औ मनमत हाथी । बोले रतनसेनके साथी ॥
होत आव दल बहुत असूभा । अस जानब कुछ होय है जूझा ॥
राजा तुइं जोगी होय खेला । यही दिवसकहं हम भये चेला ॥
जहां गाढ़ ठाकुरकर होई । सङ्ग न छांड़े सेवक सोई ॥
जो हम मरन दिवस मन ताका । आज आय पूजी वह साका ॥
पर जिव जाय जाय नहिं बोला । राजा सत सुमेरु नहिं डोला ॥
गुरुकेर जो आयसु पावहिं । सोहं होहिं औ चक्र चलावहिं ॥

आज करहिं रन भारथ सत बाचा दै राख।
सत्त गुरू सत कौतुक सत्त भरें पुनि साख॥
गुरू कहा चेला सिध होहु। प्रेम वार है करो न कोहु॥
जा कहं सीस नायकै दीजे। रंग न होय जूझ जो कीजे॥
जेहिं जिय प्रेम पानि भा सोई। जेहि रंग मिलै वही रंग होई॥
जो पै जाय प्रेमसों जूझा। कित तप मरहि सिद्ध जेहि बूझा॥
यहि सत बहुत जूझ नहिं करिये। खरग देख पानी है दुरिये॥
पानी कहा खड़ग की धारा। लौट पानि सोइ जो मारा॥
पानीसेती आग का करई। आय बुझाय पानि जो परई॥

सीस दीन्ह मैं आगमन प्रेम पानि शिर मेल।
अब सो प्रीति निवाहं चलों सिद्ध होय खेल॥
राजैं छेंक धरा सब जोगी। दुख ऊपर दुख सहै वियोगी॥
माजिय धड़क हिये डर कोई। ना जिय मरन जिवन कस होई॥
नागफांस उन्ह मेली ग्रीवां। हर्ष न विसमौ अब को जीवां॥
जो जिव दीन्ह सो लेव निरासा। विसरे नहिं जो लहत न सांसा॥
कर किंगरी तेहि तन्त बजावा। यही गीत वैरागी गावा॥
भलहिं आन गर मेली फांसी। हिये न सोच ऐस रिस नासी॥
मैं गयें फांद वही दिन मेला। जेहि दिन प्रेम-पन्थ है खेला॥

परगट गुपत सकलमहं पूर रहा सो नाउं।
जहं देंखों वह देखों दूसर नहिं कहुं जाउं॥
जब लग गुरु मैं अहान चीन्हा। कोटि अंतर पट बिच हुत दीन्हा
जो चीन्हा तो और न कोई। तन मन जिव जोबन सब सोई॥

हौं हौं कहत धोख अंतराहीं। जो भा सिद्ध कहां परछाहीं॥
मारे गुरू कि गुरू जियावा। और को मार मरे सब आवा॥
सूरी मेल हस्ति गुरु परू। हौं नहिं जानौं जानै गुरू॥
गुरू हस्तिपर चढ़े सो पेखा। जगत जो नास्त नास्त सब देखा॥
अंधि मीन जस जलमहं धावा। जल जीवन जल दीठि न आवा॥

गुरू मोर मोरे हिये दिये तुरंगहि ढ़ाठ।
भीतर करहि डुलावै बाहर नाचै काठ॥

सों पदमावत गुरु हौं चेला। जोग-तन्त जेहि कारन खेला॥
तज वह बारन जानौं दूजा। जेहि दिन मिलै जात्रा पूजा॥
जीव काढ़ भुइं धरौं ललाटू। वहिकहं देउं हियामहं पाटू॥
को मोहिं लै सो छुवावै पावा। नौ अवतार देइ नई काया॥
जीव चाहि सो अधिक पियारी। मांगै जीव देउं बलिहारी॥
मांगै सीस देउं मैं ग्रीवां। अधिक तेरे जो मारे जीवां॥
अपने जिव कर लोभ न मोहौं। प्रेम बार होय मांगौ ओहौं॥

दरसन वहका दिया जस हौं सुभिखारि पतंग।
जो करवट सिर सारी मरत न मोरौं अंग॥

पदमावत कमला ससिजोती। हंसै फूल रोवै तब मोती॥
परजापतें हंसी औ रोजू। लायि दूत होय नित खोजू॥
जबहिं सुरज कहं लागा राहू। तबहिं कमल मन भयो अगाहू॥
विरह अगस्त जो विषमो भयऊ। सरवर हरष सूख सब गयऊ॥
परगट ढार सकी नहिं आंसू। घुट घुट मांस गुपत होय नासू॥

जस दिन मांझ रयनि होय आई। बिगसत कमल गयो मुरझाई॥
राता बदन गयो होय सेता। भवंर भंवर रहि गई अचेता॥

चितहि जो चित्र कीन्ह धनि रों रों अंग समीप।
सहस साल दुख आह भर मुरछि परी कामीप॥

पद्मावत संग सखो सयानो। गन कै नखत पीर ससि जानी॥
जानेहु मरम कमलकर कोई। देख बिथा बिरहिनकी रोई॥
बिरहा कठिन कालको कला। बिरहन सहो कालपर भला॥
कालं काढ़ ले जीव सिधारा। बिरह-काल मारे पर मारा॥
बिरह आग पर मेले आगी। बिरह घावपर घाव बिजागी॥
बिरह बानपर बान पसारा। बिरह रोगपर रोग संचारा॥
बिरह सालपर साल नवेला। बिरह कालपर काल दहेला॥

तन रावन होय सिर चढ़ा बिरह भयो हनुमन्त।
जारे ऊपर जारे तजे न कै भसमन्त॥

कोइ कुमोद परसहिंकरपाया। कोइ मलयागिरि छिरकहिंकाया
कोइ मुख सीतल नीर चुवावै। कोइ अंचल सों पवन डुलावै॥
कोइ मुखअमिरत आन निचोवा। जनु विषदीन्ह अधिकधनिसोवा
जोवहिं सांस खनहि खन सखी। कब जिव फिरे पवन औ पंखी
बिरह काल होय हिये जो पैठा। जीव काढ़ ले हाथे बैठा॥
खनक मौन बांधा खन खोला। गहेसि जीभ मुख जाय न बोला
खनहि बीझकी बानन मारा। कंपकंप नारि मरै बिकरारा॥

कतहूं बिरह न छांड़ि भा ससि गहन गिरास।
नखत चहूं दिसि रोवहिं अंधरे धरैत अकास॥

घरी चार इमि गहन गिरासी। पुनि बिधि हिये जोति परकासी
निसस ऊभ भर लीन्हे सांसा। भइ अधार जीवन की आसा॥
बिनवहिं सखी छूट ससि राहू। तुम्हरी जोति जोति सब काहू॥
तूं ससिवदनि जगत उजियारी। के हर लीन्ह कीन्ह अंधियारी॥
तू गजगामिनि गरब-गहेली। अब कस अस सत छांड़ दहेली॥
तू हर लंक हेराई केहर। अब कस हार करेसि है हर हर॥
तू कोकिलबैनी गजमोहा। कौन व्याध होय गहो निछोहा॥

कमलकरी तू पदमिनि गइ निसि भयो बिहानु।
अबहूं न संपुट खोलिसि जोरि उठा जग भानु॥

भानु नाउं सुनि कमल विकासा। फिरकी भंवर लीन्ह मधु वासा॥
सरद चन्द मुख जोभ उघेली। खंजननयनि उठी कर केली॥
विरह न बोल आव मुखमाई। मर मर बोल जीव बरियाई॥
डोल विरह दारुन हिय कांपा। खोलन जाय विरह दुख झांपा
उदधि समुद्र जस तरंग दिखावा। चख घूमहिं मुख बात न आवा
यह सठ लहर लहर पर धावा। भंवर परा जिव थाह न पावा
सखी आन बिष देव तो मरनू। जीव न पेट मरन का डरनू॥

खने उठै खन बूड़े अस हिय कमल सकेत।
हीरामनहिं बुलावहि सखी कहन जिव लेत॥

चेरी धाय सुनत खन धाई। हीरामन ले आय बुलाई॥
जनहु वैद्य औषध ले आवा। रोगियें रोग मरत जिव पावा॥
सुनत असीस नयन धन खोली। बिरह बैन कोकिल जिमि बोली
कमलहि विरह बिथा जस वाढ़ी। केसर वरन पीर हिय काढ़ी

कत कमलहि भा प्रेम अंगूरू। जो पै गहन लेइ दिनसूरू॥
पुरयनि छाहिं कमलकी करी। सकल विथा मुनि अस तुम हरी
पुरुष गंभीर न बोलहिं काहू। जो बोलहिं तो और निबाहू॥

एतना बोल कहत मुख पुनि होइ गई अचेत।
पुनि की चेत संभारी वही बकत मुख लेत॥

और दगध का कहौं अपारा। सती जो जरै कठिन अस भारा॥
होय हनुमन्त पैठ है कोई। लंका दाह लाग तन सोई॥
लंका बुझी आग जो लागी। यहि न बुझै तस आंच विजागी॥
जनहु अगिनकै उठहिं पहारा। वै सब लागहिं अंग अंगारा॥
कट कट मांस सराग पुरोवा। रकतकी आंसु मांस सब रोवा॥
खनकै वार मांस अस भूंजा। खनहिं चपाय सिंह अस गूंजा॥
यहरी दगध हत उतम मरीजे। दगध न सहौ जीवपर दीजे॥

जहं लग चंदन मलयागिरि औ सायर सब नीर।
सब मिल आय बुझावहिं बुझहि न आग सरीर॥

हीरामन जो देखिसि नारी। प्रीति वेल उपजी हिय बारी॥
कहेसि न तुम कस होहु दहेली। उरझी प्रेम प्रीतिकी बेली॥
प्रीति-बेल जनि उरझै कोई। उरझा मुयें न छूटै सोई॥
प्रीति-वेल ऐसे तन डाढ़ा। पल हत सुख बाढ़त दुख बाढ़ा॥
प्रीति-बेलकी अमर को बोई। दिन दिन बढ़े छीन नहिं होई॥
प्रीति बेल संग विरह अपारा। सरग पतार जर तेहि झारा॥
प्रीति अकेल वेल जहं छावा। दूसर वेलि न सरवर पावा॥

प्रीति-बेल उरभाय जब तब सुजान सुख साख।
मिले पिरीतम आयके दाख बेल रस चाख॥

पदमावत उठि टेके पाया। तुमहूं तो देखौ पीतम छाया॥
कहत लाज औरहि रहि न जीऊ। इक दिस आग दुसर दिस पीऊ
तुम सो मोर खेवक गुरु देवा। उतरौं पार तेही बिधि खेवा॥
सूर उदयगढ़ चढ़त भुलाना। गहने गहा कमल कुंभलाना॥
औ हत होय मरौं नहिं भूरी। यह शठ मरौं जो नेरहि दूरी॥
घटमहं बकत बकत भा मेरू। मिलहि न मिलहि परा तस फेरू॥
दमनहिं नलहिं जो हंस मिलावा। तब हीरामन नाउं कहावा॥

मूर सजीवन दूर है साले सकती बान।
प्रान मुकति अब होत है वेग देखावहि आन॥

हीरामन भुइं धरा ललाटू। तुम रानी जुग जुग सुखपाटू॥
जेहिके हाथ जरी औ मूरी। सो जोगी अब नाहीं दूरी॥
पिता तुम्हार राजकर भोगी। पूजे विप्र मरावै जोगी॥
पंवर पंवर कुतवाल सो वैठा। प्रेमक लुबध सुरंग होय पैठा॥
चढ़त रयनि गढ़ होय गा भोरू। आवत बार धरा कै चोरू॥
अब ले गये देय वह सूरी। तेहि की अगाह बिथा तुम पूरी॥
अब जिव तुम काया वह जोगी। काया रोग जान पै रोगी॥

रूप तुम्हार जोगी आपन पिंड कमावा फेर।
रहा हेराय खंड तेहि आपे काल न पावत हेर॥

हीरामन जो बात यह कही। सूरज गहन चांद पुनि गही।
सुरज कि दुख जो ससि होय दुखी। सो कित दुखमानै करसुखे

अब जो जोगि मरे मोहिं नेहा। मोहिं वह साथ धरत गगनेहा
रहै तो करौं जनमभर सेवा। चलै तो यह जिव साथ परेवा॥
कौन सो करलै गहि गुरु सोई। परकाया-परवेस जो होई॥
पलट सो कौन पंथ बिधि खेला। चेला गुरू गुरू होय चेला॥
कौन खण्ड अस रहा लुकाई। आवै काल हेर फिर जाई॥

चेला सिद्ध सो पावै गुरु सौं करै अछेद।
गुरू करैं जो किरपा कहै सो चेला भेद॥

अनरानी तुम गुरु वह चेला। मोहिं पूछहु कै सिद्ध न वेला॥
तुमचेला कहं परसन भई। दरसन देय मंडफ चल गई॥
रूप गुरूकर चेलहि डीठा। जित सभाय होय चित्त पईठा॥
जीव काढ़ लै तुम अपसईं। वह भा काया जिव तुम भईं॥
कया जो लाग धूप औ सेज। कया न जान जानि पै जीउ॥
भोग तुम्हार मिला वह जाई। जो वह विथा सो तुम कहं आई॥
तुम वहकी घट वह तुम माहां। काल कहां पावै वह छाहां॥

अस वह जोगी अमर भा परकाया-परवेस।
आव काल गुरु-तन देखी फिर सो करै अदेस॥

सुनि जोगीकी आमर करनी। न्योरी विरह-विथाकी मरनी॥
कमलकरी होय बिकसा जीउ। जनु रवि उदय छूट गासीउ॥
जो भा सिद्ध को मारै पारा। नौंवू रसतें होय जो छारा॥
कहो जाय अब मोर संदेसू। तजो जोग अब होहु नरेसू॥
जन जानहु हौं तुम सौं दूरी। नयनहिं मांझ गड़ी वह सूरी॥

तुम परखेद घटै घट केरा।। मोहिं घट जीव घटत नहिं वेरा॥
तुमकहं पाठ हियेमें साजा। अब तुम मोर दुहूं जग राजा॥

जोरी जियहिं मिल गल रहै मरहिं तो एकहिं दोउ।
तुम पै जिय जन होय कुछ मो जिय होय सो होउ॥

शूलीखण्ड।

बांध तपा आनौ जहं सूरी। जुरी आय सब सिंहलपूरी॥
पहिले गुरू दिय कहं आना। देख रूप सब कोउ पछताना॥
लोग कहैं यहि होय न जोगी। राज कुंवर कोउ अहै बियोगी॥
काहू लाग भयो है तपा। हिये सुमालकेर मुख जपा॥
जस मारेकहं बाजा तूरू। सूरी देख हंसा मनसूरू॥
चमके दसन भयो उजियारा। जो जहं तहां बीज अस मारा॥
जोगीकेर करो पै खोजू। मग यहि होय न राजा भोजू॥

सब पूछहिं कछु जोगी जाति जनम औ नांउ।
जहां ठांव रावकर हंसा सो कछु केहि भाउ॥

का पूछो अब जाति हमारी। हम जोगी औ तपा भिखारी॥
जोगी जाति कौन हो राजा। गारि न कोह मार नहिं लाजा॥
निलज भिखार लाज जेहिं खोई। तेहिकी खोज परै जनि कोई॥
जाकर जीव मरेपर वसा। सूरी देख सो कस नहिं हंसा॥
आज नेह सों होय निवेरा। आज भूमि तज गगन वसेरा॥

आज कया पिंजर बंद टूटा। आजहिं प्रान परेवा छूटा॥
आज नेह सो होय नियारा। आज प्रेम संग चला पियारा॥

आज अवध सर पहुंची गयी जाउं सुख रात।
वेग होड्ड मोहिं मारड्ड जनि चालड्ड यह बात॥

कहहिं संवरि जेहि चाहेसि संवरा। हम तुम करहिं केतिकर भंवरा
कहेसि वही संवरों हर फिरा। मुये जौत आहौं जेहि केरा॥
औ सुमिरों पदमावत रामा। यहि जिव न्योछावर तेहि नामा॥
रकत को बूंद कया जब परहीं। पदमावत पदमावत कहहीं॥
रहै तो बूंद बूंदमहं ठाउं। परड्डं तो सोई ले ले नाउं॥
रोम रोम तन तासो ओधा। सूतहि सूत वेध जिव सोधा॥
हाड़हि हाड़ सबद सो होई। नस नस माहं उठे धुनि सोई॥

खाय विरह गा ताकर गूद मांस किये हान।
हों पुनि सांचा होय रहा वहकी रूप समान॥

जोगिहि जबहिं गाढ़ अस परा। महादेव कर आसन टरा॥
औ हंसि पारबतीसो कहा। जानड्ड सूर गहन अस गहा॥
आज चढ़े गढ़ ऊपर तपा। राजैं गहा सूर तब छिपा॥
जग देखेगा कौतुक आजू। कीन्ह तपा मारे कहं साजू॥
पारबती सुनि पांयन परी। चलौ भहेस देखें इक घरी॥
भेष भाट भाटिनकर कीन्हा। औ हनुमन्त वीर संग लीन्हा॥
आय गुप्त ह्वै देखन लागी। वह मूरत कस सती सभागी॥

कंटक अस्रुभ देखके आपन राजा गरब करेय।
दईकी दिसा न देखे वह काकहं जंय देय॥

आसन लिये रहा हो तपा। पद्मावत पद्मावत जपा ॥
मन समाध तासों धुन लागी। जेहिं दरसन कारन बैरागी ॥
रहा समाय रूप वह नाऊं। और न सूझव ार जहं जाऊं ॥
औ महेसकहं करी अदेसू। जेहि यह पन्थ दीन्ह उपदेसू ॥
पारबती पुनि सत्य सराहा। औ फिर मुख महेसकर जाहा ॥
हिये महेस जो भई महेसी। कित सिर नावहिं ये परदेसी ॥
मरतेहुं लीन्ह तुम्हारा नाऊं। तुम चित कीन्ह रही यह ठाऊं ॥

मारतही परदेसी राख लेहु यहि बीर।
कोइ काहूकर नाहीं जो हों चले न तीर ॥

ले संदेस सुअटा गा तहां। सूली देहिं रतनकों जहां ॥
देख रतन हीरामन रोवा। राजा जिव लीगन हठ खोवा ॥
देख रुदन हीरामनकेरा। रोवहिं सब राजा मुख हेरा ॥
मांगहिं सब विधिना सों रोई। कै उपकार छुड़ावै कोई ॥
कहि संदेस सब विपति सुनाई। विकल बहुत कुछ कही न जाई ॥
काढ़ प्रान बैठे लिये हाथा। मरै तो मरों जियों इक साथा ॥
सुनि संदेस राजा तब हंसा। प्रान प्रान घट घटमहं बसा ॥

हीरामन औ भाट दसौंधी भये जिवपर इक ठाउं।
चल सो जाय अब देख तहं जहं बैठो रहिराउं ॥

राजा रहा दीठि की औंधी। रहि न सका तब भाट दसौंधी ॥
कहेसि मेल की हाथ कटारी। पुरुष न आछे बैठि पिटारी ॥
कान्ह कोप की मारा कंसू। गोकुल मांझ बजावा बंसू ॥
गन्धवसेन जहां रिस वाढ़ी। जाइ भाट आगी भा ठाढ़ा ॥

ठाढ़ देख सब राजा राजा। बायें हाथ दीन्ह बर भाजा ॥
बोला गन्ध्रबसेन रिसोई। कैस जोगि कस भाट असाई ॥
जोगी पानि आगि तू राजा। आगिहि पानि जूझ नहिं छाजा ॥

आगि बुझाई पानिसों जूझ न राजा बूझ।
लीन्हे खप्पर बार तुहिं भिक्षा देहि न जूझ ॥

जोगि न होय आहि सो भोजू। जानहु भेद करो सो खोजू ॥
भारथ होय जूझ जो ओधा। होहिं सहाय आय सब जोधा ॥
महादेव रनघण्ट बजावा। सुनि कै सबद ब्रह्म चलि आवा ॥
बासुकि फन पतारसों काढ़ा। आठो कुली नाग भा ठाढ़ा ॥
छप्पन कोटि बसन्दर बरा। सवा लाख परबत फरहरा ॥
चढ़े अस्त्र लै कृष्ण मुरारी। इन्द्रलोक सब लाग गुहारी ॥
तैंतिस कोटि देवता साजा। औ छानवे मेघ-दल गाजा ॥

नब्बे नाथ चलि आवहिं औ चौरासी सिद्ध।
आज महाभारथ चले गगंन गरुड़ औ गिद्ध ॥

भइ अज्ञा को भाट औ भाजा। बायें हाथ दियि बर भाजा ॥
को जोगी अस नगरी मोरी। जो दे सेंध चढ़े गढ़ चोरी ॥
इन्द्र डरे नित नावै माथा। जानत कृष्ण शेष जे नाथा ॥
ब्रह्मा डरें चतुरमुख जासू। औ पाताल डरे बलि बासू ॥
धरति डरे औ मंडफ मेरू। चन्द्र सुरज औ गगन गंभीरू ॥
मेघ डरहिं बिजुली जेहि डीठी। कूर्म्म डरे धरती जेहिं पीठी ॥
चहों तो सब माकों घर केसा। ओर की गिनतं अनेग नरेसा ॥

बोला भाट नरेस सुनि गरब न छाजा जीव।
कूम्हकरनकी खोपड़ी बूड़त बाचे भौंव॥
रावन गरब बिरोधा राम्। ओही गरब भयो संग्राम्॥
तस रावन अस को बरबंडा। जेहिं दस सीस बीस भुजदंडा॥
सूरज जेहिकी तपै रसोई। निज वैसन्दर धोती धोई॥
सुक सुनेटा ससि मसयारा। पवन करै नित बार बुहारा॥
मीच लाय कै पाटो बांधा। रहा न दूसर सपने कांधा॥
जो अस बज्र टरहि नहिं टारा। सोउ मर दोउ तपसीकर मारा॥
नाती पूत कोटि दस अहा। रोवनहार न एको रहा॥
ओछ जान कै काहू जनि कोइ गर्ब करेय।
ओछी पार दई है जीत पत्र जो देय॥
अब जो भाट तहां हत आगी। विनय उठा राजा रिस लागी॥
भाट अहै ईश्वरकी कला। राजा सबरा कहं अरकला॥
भाट मीच पै आपन दीसा। ता कह कौन करै रिस रीसा॥
भयी रजाय सुगन्ध्रबसेनी। काहि मीच कै चढ़ा नसेनी॥
कह आनी बानी अस पढ़े। करसि न बुद्धि भेंट जो कढ़े॥
जाति भाट कित औगुन लावस। बायें हाथ राज बरभावस॥
भाट नाउं का मारों जीवां। अबहूं बोल नायके ग्रीवां॥
तुइ रे भाट वै जोगी तोहि यह कहांक संग।
कहां चढ़े अस पावा कहां भयो चित भंग॥
जो सत पूंछेसि गन्ध्रब राजा। सतपै कईं परै नहिं गाजा॥
भाटहि काहि मीचसों डरना। हाथ कटार पेट हन मरना॥

जम्बूदीप चित्त उर देसू। चित्रसेन बड़ तहां नरेसू॥
रतनसेन यहि ताकर बेटा। कुल चौहान जाय नहिं मेटा॥
खांड़े अचल सुमेरु सुभारू। टरै न जो लागै संसारू॥
दान सुमेरू देत नहिं खांगा। जो यह मांग न औरहि मांगा॥
दाहिन हाथ उठायों ताही। और को अस बरभावो जाही॥

नाउं महापात्र मुहिं तेहेकि भिखारी ढीठ।
रिस लागी खरि वात कहि खरि पै कहै बसीठ॥

ततखन सुनि महेस मन लाजा। भाट किरनि ह्वै बिनवा राजा॥
गन्ध्रबसेन तू राजा महा। हौं महेस मूरत सुनि कहा॥
पै जोवात होय भल आगी। कहां चही का भा रिस लागी॥
राजकुंवर यहि होहिं न जोगी। सुनि पद्मावत भयो वियोगी॥
जम्बुदीप राजघर-वेटा। जो है लिखा सो जाय न मेटा॥
तू रे सवै जाय वह आना। ओ जाकर विरोक तें माना॥
पुनि यह वात सुनी शिवलोका। कर सुविवाह धर्म्म है तोका॥

मांग भीख खप्पर लिये मुये न छांड़े वार।
बूझ देख जो कनक-कचूरी भीख देह नहिं मार॥

औ हट होहरे भाट भिखारी। का तू मोहिं देइ अस गारी॥
को मोहिं जोग जगत होइ पारा। जासों हेरों जाय पतारा॥
जोगी जती आव जित कोई। सुनत तिरासमान भा सोई॥
भीख लेइ फिर मांगो आगी। यहि सब रयनि रहे गढ़ लागी॥
जस यहि इच्छ वहों तेहि दीन्हा। नाहिं वेध सूली जिव लीन्हा

जेहि अस साध होय जिव खोवा। सो पतंग दीपक तस रोवा॥
सुर नर मुनि गुनि गन्धव देवा। तेहिकी गिने करहिं नित सेवा॥

　　मोसों को सरवर करै अरे सुनि भूठि भाट।
　　छार होय जो चालों गज हस्तिनके ठाट॥

जोगी घर मेले सब पाछे। उरयी माल आये रन काछे॥
मंत्रिन कहा सुनो हो राजा। देखहु अब जोगिनकर काजा॥
हम जो कहा तुम करहु न जूझा। होत आवइर जगत असूझा॥
खन इकमहं भ्रु रमट होइ बीता। दरमहं चढ़े जो रहै सो जीता
कै धीरज राजा तब कोपा। अंगद आय पांव रन रोपा॥
हस्ति पांच जो अगमन धाये। ते अंगद धर सूंड़ि फिराये॥
दीन्ह उड़ाय सरगकहं गये। लौटि न फिरें तहहिं कै भये॥

　　देखत रहै अचम्भौ जोगी हस्ती बहुर न आय।
　　जोगीकर अस जूझब भूमि न लागत पांय॥

कहहिं बात जोगी हम पाये। छिन इक मांह चहत हैं धाये॥
जोलहि धावहिं अस का खेलहु। हस्तिहिं केर जूह सब पेलहु॥
जो गज पेल होय रन आगी। तस बगमेल करहु संग लागी॥
हस्तिकी जूह आय अंग सारी। हनुमत तवै लंगूर पसारी॥
जोहि सो सेन बीचरन आई। सबै लपेट लंगूर चलाई॥
बहुतक टूट भये नौ खण्डा। बहुतक जाय परे ब्रह्मण्डा॥
बहुतक भुवन सोह अलीखा। रहे जो लाख भये ते लीखा॥

　　बहुतक परे समुद्रमहं परत न पावा खोज।
　　जहां गरब तहं पौरा जहां हंसी तहं रोज॥

फिर आगी का देखे राजा। ईश्वर केर घंट रन बाजा॥
सुना संख जो विष्णु अपूरा। आगी हनुमतकेर लंगूरा॥
लीन्हें फिरें लोक ब्रह्मण्डा। सरग पतार लोवा मृतमंडा॥
बलि वासुक औ इंद्र नरिंदू। राहु नखत सूरज औ चंदू॥
जमवंत दानव राकस पुरे। अहतो बज्र आय रन जुरे॥
जेहि कर गरब करत हत राजा। सो सब फिरि वैरी होइ साजा
जहंवां महादेव रन खरा। सीस नाय नृप पांयन परा॥

केहि कारन रिस कीजिये हौं सेवक औ चेर।
जेहि चाही तेहि दीजिये बारि गुसाईं केर॥

जब महेस उठ कीन्ह वसीठी। पहिले कडू अंत होय मीठी॥
तू गंधरव राजा जग पूजा। गुन चौदह सिख देइको दूजा॥
हीरामन जो तुम्हार परेवा। गा चितौर औ कीन्हेसि सेवा॥
तेहि बुलाय पूंछो वह देसू। औ पूंछो जोगिहि जस भेसू॥
हमरे कहत रोष नहिं मानो। जो वह कहै सोई परमानो॥
जहां बारि तहंवां वर ओका। करहु विवाह धरम बड़ तीका॥
जो पहिले मन मान न कांधे। परखे रतन गांठ तब बांधे॥

रतन छिपाये ना छिपै पारख होय सो पेष।
घाल कसोटी दीजियै कनककचूरी भेष॥

हीरामन जो राजें सुना। रोष बुझाय हिये महं गुना॥
अज्ञा भई बोलावहु सोई। पंडित हूते दोष नहिं होई॥
एक कहंत सहसक दस धाये। हीरामनहिं वेग ले आये॥
खोला आगे आन मंजसा। मिला निकसि बहु दिनकर रूसा॥

अस्तुति करत मिला बहु भांती। राजैं सुना हिये भइ सांती ॥
जानो जरत अगिन जल परा। होय फुलवार रहस हिय भरा ॥
राजैं मिल पूंछो हंस बाता। कस तन पियर बरन मुख राता ॥

चतुरवेद तुम्ह पंडित पढ़े सास्त्र औ वेद।
कहां चढ़े जोगी गढ़ आन कीन्ह घर भेद ॥

हीरामन रसना रस खोला। दै असीस औ अस्तुति बोला ॥
इंद्रराज राजेखर महा। सुनि हिय रिस कुछ जाय न कहा ॥
पै जो बात होय भल आगी। सेवक निडर कहै रिस लागी ॥
सुआ सुफल अमिरत पै खोजा। होय न विक्रम राजा भोजा ॥
हौं सेवक तुम आदि गुसांईं। सेवा करौं जियौं जबताईं ॥
जो जिव दीन्ह देखावा देसू। सोप जियमहं बसे नरेसू ॥
जो वह सुंवरै एकैतोहीं। सोई पंखि जगत रति मोहीं ॥

नयन बैन औ सरवन सबहि तोर परसाद।
सेवा मोर यही नित बोलौं आसिरवाद ॥

जो अस सेवक जेहि तप कसा। तेहिक जीभपै अमिरत बसा ॥
तेहिं सेवककी करमहिं दोषू। सेवा करत करै पति रोषू ॥
औ जेहि दोष निदोषहिं लागा। सेवक डरा जीव लै भागा ॥
जो पंखी कहवां थिर रहना। ताकै जहां जाय जो डहना ॥
सप्तदीप फिर देखिउं राजा। जम्बूदीप जाय तब बाजा ॥
तहं चितौर देखो गढ़ ऊंचा। ऊंच राज सिर तोप पहूंचा ॥
रतनसेन यह तहां नरेसू। सो आन्यो जोगी कर भेसू ॥

सुआ सुफल ले आनिहि तेहो गुन मुख रात।
काया पीत सो तासों संवरों विक्रम बात॥

पहिले भयो भाट सतभाखो। पुनि बोला हीरामन साखो॥
राजा भा निश्चय मन माना। बांधा रतन छोड़ कै आना॥
कुल पूंछा चौहान कुलीना। रतन न बांधे होय मलीना॥
हीरा दसन पान रंग पागो। विहंसत वदन बीज वरतागो॥
मुंद्रा श्रवन बीन सों चापे। राज बैन उघरे सब झांपे॥
आना काटर एक तुखारू। कहा सुफेरि भयो अस वारू॥
फेरा तुरी छतीसो खुरी। सबहिं बखानी सिंहलपुरी॥

कुंवर बतीसोलच्छना सहसकिरन जस भान।
काह कसौटी कसिये कंचन बारह बान॥

देख सुरजकर कमल संजोगू। अस्त अस्त बोला सब लोगू॥
मिला सो वंस अंस उजियारा। भा विरोक औ तिलक संवारा॥
अनिरुधको जो लिख जय मारा। को मेटै बानासुर हारा॥
आज मिलो अनिरुधकहं उखा। देव इन्द्र दीन्हो सिर दूखा॥
खड़ग सूर भुइं सरवर केवा। वनखंड भंवर होय रसलेवा॥
पछमक वार पुरबको बारी। लिखी जो जोरी होय न न्यारी॥
मानुष साज लाख मन साजा। सोई होय जो विधि उपराजा॥

गये बाजन जो बाजत जिय मारन रनमाहं।
फिर बाजनते बाजे मंगलचार उनाहं॥

बोल गुंसाईं कर मैं माना। कहि सो जगत उतरकहं आना॥
माना बोल हरष जिव बाढ़ा। औ विरोक भा टीका गाढ़ा॥

दोनों मिलि मनावा भला । पुरुष आप आपेकहं चला ॥
लीन्ह उतारी जो हत जोगू । जो तप करै सो पावै भोगू ॥
वह मन चित जो एकौ अहा । मार लीन्ह नहिं दूसर कहा ॥
जो अस कोई जिवपर छेवा । देवता आय करहिं तेहि सेवा ॥
दिन दस जीवन जो दुख देखा । भा जुग जुग सुख जहां न लेखा

रतनसेन का बरनौं पदमावतकर व्याह ।
मन्दिर वेग संवारो मन्दिर तोरा छाह ॥

विवाहखण्ड ।

लगन धरी औ रचा विवाहू । सिंहल निवत फिरा सब काहू ॥
बाजन बाजे कोटि पचासा । भा आनद सगरे कैलासा ॥
जेहि दिनका नित देव मनावा । सोइ दिवस पदमावत पावा ॥
चांद सुरज मन माथे भागू । औ गावहिं सब नखत सुहागू ॥
रच रच मानिक माड़ौ छावहिं । औ भुइं राति बिछाव बिछावहिं
चन्दन-खम्भ रचे चहुं पांती । मानिक-दिया बरहिं दिनराती ॥
घर घर मन्दिर रचे दुवारा । जहंतक नगर गीत झंकारा ॥

हाट बाट सब सिंहल जहं देखौ तहं रात ।
धन रानी पदमावत जाकर ऐसि बरात ॥

रतनसेनकहं कपड़ा आये । हीरा मोति पदारथ लाये ॥
कुंवर सहस संग अहैं सभागी । बिनय करैं राजापहं लागी ॥

जेहिंलग तुम साधा तप जोगू। लेहु राज मानो सुख भोगू॥
मज्जन करहु बिभूति उतारो। कर अस्नान चित्र सम सारो॥
काढ़हु मुन्द्रा फटक अभाऊ। पहिरो कुण्डल कनक जड़ाऊ॥
छोरहु जटा फुलायल लेहू। झारहु केस मुकुट सिर देहू॥
काढ़हु कंथा चिरकुट लावा। पहिरो राता दगल सुहावा॥

पांवरि तजहु देहु पग पैरी आवा बांक तुखार।
बांध मौर धरि छत्र सिर बेग होहु असवार॥

साजा राजा बाजन बाजे। मदन सहाय दोउ दल गाजे॥
औ राता सोने रथ साजा। भइ बरात गोहन सब राजा॥
बाजत गाजत भा असवारा। सब सिंहलने कीन्ह जुहारा॥
चहुं दिस जस अल नखत राईं। सूरज चढ़ा चांद की ताईं॥
सब दिन तपे जैस हियमाहां। तेहि रात पाई सुख छाहां॥
ऊपर छत्र राति तस छावा। इन्द्र लोक सब सेवा आवा॥
आज इन्द्र अछरासों मिला। भव कैलास होहिं सिंहला॥

धरती सरग चहुं दिस पूर रही मसयार।
बाजत आवै मंदिरकहं होहिं मंगलाचार॥

पद्मावत धोराहर चढ़ी। धौं कस रवि जा कहं ससि करी॥
देख बरात सखिनसों कहा। यह महं कौन सो जोगी अहा॥
कैस जोग ले ओर निवाहा। भयो सूर चढ़ चांद बिवाहा॥
कौन सिद्ध सो ऐस अकेला। जे सिर नाय प्रेम सो खेला॥
कासों पिता बचन अस हारी। उतरभ दीन्ह दीन्ह तेहि बारी॥

काकहं दई ऐस जिव दीन्हा। जे जिह मार जीत रन लीन्हा॥
धन पूरुष अस नवे न नारी। औस परस हो देस परारी॥

को बरबन्द बीर अस मोहिं देखिकर चाव।
पुनि जायहि जनवासहि सखि री वेग देखाव॥

सखी देखावहिं चमकहि बाहू। तू जस चांद सुरज तोर नाहू।
छिपा न रहै सुरज-परकासू। देख कमल मन भयो बिकासू॥
वह उजियार जगत उपराहीं। जग उजियार सो तेहि परछाहीं
जस रबि देख उठै परभाता। उठा छत्र देखहिं सब राता॥
वही मांझ भा दूलह सोई। और बरात संग सब कोई॥
सहसहिं किरन रूप विधि गढ़ा। सोनेकै रथ आवै चढ़ा॥
मन माथे दरसन उजियारा। सौंह निरख नहिं जाय निहारा॥

रूपवन्त जस दरपन धन तू जाकर कन्त।
चाहो जइस मनोहर मिला सो मनभावन्त॥

देखा चांद सुरज जस साजा। सहसहिं भाव मदन तन गाजा॥
हुलसे नयन दरस मदमाते। हुलसे अधर रंग रस राते॥
हुलसा वदन उपर रवि आई। हुलसा हिया कंचुक न समाई॥
हुलसे कुच कसनी-बंद टूटी। हुलवे भुज वलियां कर फूटी॥
हुलसी लंक कि रावन राजू। राम लषन दर साजहिं साजू॥
आज चांद-घर आवा सूरू। आज सिंगार होय सब चूरू॥
आज कटक जो राहत कामू। आज विरहकर होय संग्रामू॥

अंग अंग सब हुलसे कोइ कतहूं न समाय।
ठांवहिं ठांव बिमोही गइ सुरछा गत आय॥

सखी संभार पियावहिं पानी। राजकुंवरि काहे कुंभिलानी॥
हम तो तोहि देखा वा पीज। तू सुरभान कैस भा जीज॥
सुनहु सखी सब कहे विवाहू। मो कहं जे सो चांद कहं राहू॥
तुम जानहु आवै पिउ साजा। यह धम धम मोकहं सब बाजा॥
जते बराती औ असवारा। यह सब मोरे चालनहारा॥
सो आगम देखत हौं झखी। आपन रहन न देखों सखी॥
होय बिवाह पुनि होय है गवना। गवनब तहां बहुर नहिं अवना
अब सो मिलन कितहि सखी परा बिछोवा टूट।
तेसि गांठ पिउ जोरव जनम न होय है छूट॥
आय बजावत बैठ वराता। पान फूल सेंदुर सब राता॥
जहं सोनेकर चित्र संवारी। आन वरात तहां बैठारी॥
मांझ-सिंहासन पाट संवारा। दूलह आन तहां बैठारा॥
कनक-खंभ लागी चहुं पाती। मानिक-दिया वरहिं दिन राती॥
भयो अचल ध्रुव योग पखेरू। फूल बैठ थिर जैस सुमेरू॥
आज दई हौं कीन्ह सुभागा। जस दुख कीन्ह नेग सब लागा॥
आज सूर ससिके घर आवा। चांद सुरज दुहुं भयो मिलावा॥
आज इन्द्र होय आयों सें वरात कैलास।
आज मिली मोहिं अछरा पूजी मनकी आस॥
होय लाग ज्योनार पसारा। कनक-पत्र परसे पनवारा॥
सोन थार मनि मानिक जरे। राय रङ्क सब आगे धरे॥
रतन जड़ाउ खोरा खोरी। जन जन आगी सौ सौ जोरी॥
गडुवन हीरं पदारथ लागी। देख बिमोहे पुरुष सभागी॥
जानहुं नखत करहिं उजियारा। छिपगये दीपक औ मसयारा॥

भइ मिल चांद सुरज की कला। भा उदोत तैसो निरमला ॥
जेहिं मानुषकहं जोति न होती। तेहि भइ जोति देख वह जोती
पांति पांति सब वैठी भांति भांति ज्योनार।
कनक पत्र दोने तरे कनकपत्र-पनवार ॥
पहिले भात परोसे आना। जनहुं सुवास कपूर बसाना ॥
छोलहिं माड़ा औ घी पोई। उजियर देख पाप गयो धोई ॥
लुचई पुरी सुहारी पूरी। एक तो तातो औ सुठकूरी ॥
खंडरा खांड़ जो खण्डे खण्डे। बरो अकोतर सोकहं हण्डे ॥
पुनि संधान आने बहु सांधो। दूध दही कि मुरन्दा बांधो ॥
पुनि बावन प्रकार जो आयि। नहिं अस देख न कबहूं खायि ॥
पुनि जावरे पोझावर आई। घीव खांड़ का कहां मिठाई ॥
जेवंत अधिक सुवासिक मुहं महं परत बिलाय।
सहस स्वाद सो पावै एक कौर जो खाय ॥
जेवन आवा बीन न बाजा। बिन बाजहिं नहिं जेवें राजा ॥
सब कुंवरन पुनि खेंचा हाथू। ठाकुर जेवं तो जेवें साथू ॥
विनय करहिं पंडित बिचवाना। काहे नहिं जेवहिं जजमाना ॥
वह कैलाश इन्द्रकर वासू। जहां न अन्न न माछर मांसू ॥
पान फूल आछो सब कोई। तुम कारन यह कीन्ह रसोई ॥
भूख तजन अमिरत है सूखा। धूप तो सीरक नीवौं रूखा ॥
नींद तो भुइं जनु सेज सपेती। छांड़ो का चतुराई एती ॥
कौन काज कहि कारन विकल भयो जजमान।
होय रजायसु सोई वेग देहिं हम आन ॥

तुम पंडित जानहु सब भेदू। पहिले नाद भयो तब बेदू॥
आदिपिता जो बिधि अवतारा। नाद-संग जिव ज्ञान संचारा॥
सो तुम बरज नेक का कीन्हा। जेवन-संग भोग बिधि दीन्हा॥
नयन बैन नासिक दुइ श्रवना। यहि चारहुं संग जेवन अवना॥
जेवन देखा नयन सिरानी। जीभहि स्वाद भुगति रस जानी॥
नासिक सबै बासना पाई। श्रवनहिं का संवरत पहुनाई॥
तेहिं का होय नाद पै पोषा। तब चारहुं कर होय संतोषा॥

औ सब सुनहुं सबद इक जिनहिं पड़ा कुछ सूझ।
नाद सुननि पंडित बरज कहो सो तुम का बूझ॥

राजा उतर सुनहु अब सोई। महि डोले जो बेद न होई॥
नाद बेद मद पेंड़ जो चारी। काया महंते लेहु बिचारी।
नाद हिये मन उपजी काया। जहं मद तहां पेंड़ नहिं छाया॥
होई अनमद जूझ सो करिये। जान बेद आंकुस सिर धरिये॥
जोगी होय नाद सो सुना। जेहि सुनि काम जरै चौगुना॥
किये जो परम तन्त मन लावा। धूंम मांत सुनि और न भावा॥
गये जो धरम पन्थ है राजा। ताकहं पुनि जो सुनै तो छाजा॥

जस मद पियें धूम कोउ नाद सुनै पै धूम।
तेहिते बरजे नेकहै चढ़े रहस के दूम॥

भइ ज्योनार फिरा खड़वानी। फिर अरगजा कुहक चंवानी॥
फेरे पान फ़िरा सब कोई। लाग्यो व्याहचार सब होई॥
माड़ो सोनकि गगन संवारा। वंदनवार लाग सब बारा॥
सजा पाट छत्तरके छाहां। रतन-चौक पूरें तेहिमाहां॥

हाथ चंदनकी खोरी। कोइ सेंदुर कोइ गहै सिंधौरी॥
कोइ कुंकहि केसर लिये रहैं। लावैं अंग रहस जनु चहैं॥
कोई लिये कुमकुमा चोवा। धन कब चहै ठाढ़ सुख जोवा॥
कोइ बीरा कोइ लीन्हे बीरी। कोइ परमल अति सुगंध समीरी
काहू हाथ कस्तूरी मेदू। भांतिहि भांति लाग सब भेदू॥
पांतिहि पांति चहूं दिस सब सांधीकर हाट।
मांझ रचा इंद्रासन पदमावतकहं पाट॥

दोनोंका मिलाप।

सात खंड ऊपर कैलासू। तहं वां नार सेज सुख साजू॥
चार खम्भ चारहुं दिस धरे। हीरा रतन पदारथ-जरे॥
मानिक दिया जरे औ मोती। होय उजियार रहा तेहि जोती
ऊपर राता चंदवा छावा। औ भुइं सुरंग बिछाव बिछावा॥
तेहिमहं पलंग सेज सुख दासी। कीन्ह बिछावन फूलहि बासी॥
दोऊं दिस गेंदवा औ गलसूई। कांचे पाट भरी धुनि रूई॥
फूलहिं भरे ऐस केहि जोगू। को तहं पौढ़ मान रस भोगू॥
अति सुकवांर सेज सो डासी छुवै न पावै कोय।
देखत नवै खनहिं खन पांव धरत कस होय॥
राजें तपत सेज जो पाई। गांठ छोरि धन सखिन छिपाई॥
अहै कुंवरि हमरे अस चारू। आज कुंवरि कर करब सिंगारू॥

हरद उतारि चढ़ावव रंगू। तव निसि चांद सुरज सो संगू॥
जनु चातक-मुख बूंद सेवाती। राजा चकचौंहत तेहिं भांती॥
जोग छूटि जनु अपछर साथा। जोग हाथकर भयो विहाथा॥
वै चतुरा कर ले अपसईं। मीत अमोल छीन ले गईं॥
वैठा खोय जरी औ बूटी। लाभ न पाव मूल भइ टूटी॥

खाय रहा ठग-लाडू तन्त मन्त वुधि खोय।
धौराहर बनखंड भयो ना हंसि आव न रोय॥

अस तप करत भयो दिन भारी। चार पहर बीते जुग चारी॥
परी सांझ पुनि सखी सो आईं। चांद रहा अपनी जो तराईं॥
पूंछहि गुरू कहांरे चेला। बिन ससिरे कससूर अकेला॥
धात कमाय सिखि तूं जोगी। अब कस जस निरधात वियोगी॥
कहां सो खोयहु बिरवा लोना। जेहिं ते होय रूप औ सोना॥
कस हर्तार पार नहिं पावा। गंधक कहां करकटा खावा॥
कहां छिपायहु चंद हमारा। जेहि विन रयनि जगत अंधियारा

नयन कौड़िया हिय समुद गुरू सो तेहि महं जोति।
मम मरजिया न होय परे हाथ न आवै मोति॥

का पूंछो तुम धात निछोही। गुरु जो कीन्ह अंतरपट ओही॥
सिधि गुटका जो मोसों कहा। भयो रांग सत हिरी न रहा॥
सो न रूप जासों दुख खोलों। गयो भरोस तहां का बोलों॥
जहं लोना विरवा की जाती। कहिको संदेस आन की पाती॥
की जो पार हरतार करीजे। गन्धक देख अभहिं जिव दीजे॥

तुम जोराकी सूर मयंकू । पुनि बिछोय सो लीन्ह कलंकू ॥
जो यहि घरी मिलावै मोही । सीस देउं बलिहारी ओही ॥
होय अबरक ईं गुरु हुआ फेर अगिनमहं दीन्ह ।
काया पीतर होय कनक जो तुम चाहो कीन्ह ॥
का बिसाय जो गुरु अस बूझा । चक्राव्यूह अभिमनु ज्यों जूझा ॥
विष जो दीन्ह अमिरत देखराई । तेहिं रे निछोह को पतियाई ॥
मरे सुजान होय तन सूना । पीर न जानै पीर बहूना ॥
पार न पाव जो गंधक पिया । सो हरतार कहो किमि जिया ॥
हम विधि गुटका जानहिं नाहीं । कौन बात पूछहुं तेहि पाहीं ॥
अब तेहि बाज रांग भा डोलौं । होय सार तो वरगौ बोलौं ॥
अबरक कै तन ईं गुरु कीन्हा । सो तन फेर अगिनमहं दीन्हा ॥
मिल जो पीतम बिछुरहि काया अगिन जराय ।
कै सु मिले तन तप बुझै कै अब मोहिं बुझाय ॥
सुनिकै बात सखी सब हंसी । जानहुं रयनि तरईं परगसीं ॥
अब सो चांद गगनमहं छिपा । लालच कै कित पावस तपा ॥
हमहुं न जाने धौं सो कहां । करब खोज औ विनउब तहां ॥
औ अस कहब आहि परदेसी । कर माया हत्या जन लेसी ॥
पीर तुमहार सुनत भा छोहू । दैव मनाय होय अस ओहू ॥
तूं जोगी तपकर मन जिया । जोगिहि कौन राजकी कथा ॥
वह रानी जहंवां सुखराज । बारह अभरन करै सो साजू
जोगी दृढ़ आसन कर दृस्थिर धर मन ठांव ।
जो न सुने तो अब सुनि बारह अभरन नांव ॥

प्रथमै मज्जन होय सरीरू। पुनि पहिरै तन चंदन चीरू॥
साज मांग सिर सेंदुर सारा। पुनि ललाट रचि तिलक संवारा॥
पुनि अंजन दोउ नयनहि करै। पुनि सो कानन कुंडल पैहरै॥
पुनि नासक भल फूल अमोला। पुनिराता मुख खाय तमोला॥
गयें अभरन पहिरै जहंताईं। औ पहिरै कर कंगन कलाईं॥
कटि छुद्रावल अभरन पूरा। पांयन पहिरै पायल चूरा॥
बारह अभरन यही बखाने। ते पहिरै बारहुं अस्थाने॥

पुनि सोरह सिंगार जस चारहुं जोग कुलीन।
दीरघ चार चार लघु चार सुभ्र चहुं खीन॥

पद्मावत जो संवारी लीन्हा। पून्यो रात दई ससि कीन्हा॥
करि मज्जन तन कीन्ह नहानू। पहिरगो चीर गयो छिप भानू॥
रचि पत्रावल मांग सेंदूरी। भरि मोतिन औ मानिक पूरी॥
चंदन चीर पहिर बहु भांती। मेघ घटा जानहुं बग-पांती॥
औ जो रतन मांग बैठारा। जानहुं गगन टूटि निसि तारा॥
तिलक ललाट धरा तस दीठा। जनहुं दुइजपर नखतन बईठा॥
कानन कुंडल खूंट औ खूंटी। जानहुं परी कचीची टूटी॥

पहिर जड़ाऊ ठाढ़ भइ कहि न जाय तस भाव।
मानहुं दरपन गगन भा तो ससि तार देखाव॥

बांक नयन औ अंजन रेखा। खंजन जानु सरद ऋतु देखा॥
जो जो हेर फेर चख मोरी। लरै सरद महं खंजन जोरी॥
भौहैं धनुष धनुष पै हारा। नयन सांध जनु बानन मारा॥
करनफूल नासक अति सोभा। ससिमुख आयै सूक जनु लोभा॥

सुरंग अधर औ लीन्ह तंबोरा। सो है पान फूल कर जोरा॥
कुसुम गेंद अस सुरंग कपोला। तेहिपर अलक भुवंगिन डोला॥
तिल कपोल अलि पंकज बईठा। वेधा सोई जो वह तिल दीठा॥

देख सिंगार अनूप विधि विरह चला तब भाग।
कालकष्ट वह उनवा सब मोरे जिय लाग॥

का बरनौं अभरन औ हारा। ससि पहिरे नखतन की मारा॥
चीर चार औ चन्दन चोला। हीर हार नग लाग अमोला॥
तेहिं झांपी रोमावलि कारी। नागिनि रूप डसी हत्यारी॥
कुच कंचुकी सिरीफल उभे। झुलसहिं चहहिं कंत हिय चुभे॥
बाहहिं बाहू ताड़ सलोनी। डोलत बांह भावगत लोनी॥
तरवन कमल-कली जनु बाधे। वसा लंक जाहु दुइ आधे॥
छुद्रघंट कटि कंचन तागा। चलते उठहिं छतीसो रागा॥

चूरा पायल अनवट विछिया पांयन परी बियोग।
हियँ लाय टक हमकह समंद नहिं तुम जान औ भोग॥

अस बारह सोरह धन साजी। चाजन और वही पै छाजी॥
बिनवहिं सखी गहर का कीजे। जें जिव दीन्ह ताहि जिव दीजे॥
संवरि सेज धन मन भइ संका। ठाढ़ तेवान टेक कर लंका॥
अनचिन्ह पिय कांपों मनमाहां। का मैं कहब गहब जो बाहां॥
वारि वैस गइ प्रीति न जानी। तरुन भई मैंमन्त भुलानी॥
जोबन गरब न कुछ मैं चेता। नेह न जानु स्याम की सेता॥
अब सो कंत पंछहि सबे वाता। कस सुख होब पीत की राता॥

हौं सुवारि औ दुलहिन पिय सो तरुन औ तेज।
ना जानौं कस होय है चढ़त कन्त की सेज॥
सुनि धन डर हिरदै तबताईं। जौलहि रहस मिला नहिं साईं॥
कौन कली जो भंवरन राई। हारन टूटि पुहुप गरुवाई॥
मात पिता जो ब्याहे सोई। जनम निवाह कंत संग होई॥
भर जमबार चहै जहं रहा। जाय न मेटा ताकर कहा॥
ताकहं बिलंब न कीजे बारी। जो पिय आयसु सोइ पियारी॥
चलहु बेग आयसु भा जैसे। कंत बोलावे रहै सो कैसे॥
मानन कर थोरा कर लाहू। मान करत रस मानै चाहू॥
साजन लिये पठाई आयसु जाय न मेट।
तन मन जोवन साज सब देइ चली लै भेट॥
पदमिन गवन हंस गयी दूरी। हस्ति लाज मेलहि सिर धूरी॥
बदन देख घट चन्द छिपाना। दसन देखके बीज लजाना॥
खंजन छिपे देखकै नैना। कोकिल छिपी सुनत मधु बैना॥
ग्रीव देखकर छिपा मयूरू। लंक देखकर छिपा सेंदूरू॥
भौंह धनुष जो छिपा अकारा। लैनौ वासुकि छिपा पतारा॥
खड्ग छिपी नासिका बिसेखी। अमृत छिपा अधर रस देखी॥
पहुंचिहिं छिपा कमल पो नारी। जंघ छिपा कदली होय बारी
अच्छर रूप छिपाई जोहि चले धन साज।
जहंलग गरब गहेल जग सबैं छिपी मनलाज॥
मिली सी गोहन सखी तराईं। लीन्ह चांद सूरजपहं आईं॥
परस रूप चांदै देखराई। देखत सुरज गैयो मुरझाई॥

सोरह किरन दीठि ससि कीन्हा। सहस किरन सूरजकहं लीन्हा
भा रवि अस्त तराईं हंसी। सुरज न रहा चांद परगसी॥
जोगी आहि न भोगी कोई। खाय करकटा गयो पर सोई॥
पद्मावत निरमल जस गंगा। नाहिं जगति जोगी भिखमंगा॥
आय जगावहिं चेला जागहु। आवा गुरू पांय उठ लागहु॥

बोलहिं सबद सहेली कान लाग गहि माथ।
गोरख आय ठाढ़ भा उठ रे चेला नाथ॥

गोरख सबद सुद्ध भा राजा। रामा सुनि रावन होय गाजा॥
गही बांह धन सेजवां आनी। अंचला ओट रही छिप रानी॥
सुकुची डरी मुरी मन वारी। गहु न बांह रे जोगि भिखारी॥
ओ हट हो जोगी तोर चेरी। आवे वास करकटा-केरी॥
देखि भिभूत छूत मुहिं लागा। कांपै चांद राहु सो भागा॥
जोगी तोर तपसि कै कथा। लागी चहै अंग मोर छया॥
बार भिखार न मांगेसि भीखा। मांगी आय सरग चढ़ सीखा॥

जोगि भिखारी कोई मंदिर न पैसे पार।
मांग लेहु कुछ भिच्छा जाय ठाढ़ हो बार॥

अन तुम कारन प्रेम-पियारी। राज छांड़ि के भयों भिखारी॥
नेह तुम्हार जो हिये समाना। चितउरसो निसरों हे आना॥
जस मालतिमहं भंवर वियोगी। चढ़ा वियोग चल्यों हे जोगी॥
भंवर खोज जस पावै केवा। तुम कारन मैं जिवपर छेवा॥
भयों भिखारि नारि तुम-लागी। दीप पतंग हे अंगयों आगी॥

एकबार मरि मिलै जो आयी। दूसर बार मरै कित जायी॥
कित तेहि मीच जो मरकै जिया। भंवर कमल मिलकै रस पिया
भंवर जो पावै कमलकहं बहु आरत बहु आस।
भंवर होय न्योछावर कमल देय हस वास॥
अपने मुहं न बड़ाई छाजा। जोगी कतहुं होंहिं नहिं राजा॥
हौं रानी तू जोगि भिखारी। जोगिहिं भोगिहिं कौन चिन्हारी
जोगी सबै छन्द अस खेला। तू भिखारि केहि माहं अकेला॥
पवन बांध अप सवहिं अकासा। मंसहिं जहां जाहिं तहं वासा॥
यैही भांति सृष्टि बहु छरी। यही भेष रावन सिय हरी॥
भंवरहिं मीच नेर जो आवा। केतकि वास लेय-कहं धावा॥
दीपक जोति देखि उजियारी। आय पंखि है परा भिखारी॥
रयनि जो देखि चन्द्रमुख ससि तन होय अलूप।
तुहूं योग अस भूला होय राजाकै रूप॥
अन धनि तू संसेर निसमाहां। हौं दिनेर जेहि कै तू छाहां॥
चांदहि कहां जोति औ कला। सुरजकी जोति चांद निरमला॥
भंवर वास चम्पा नहिं लेई। मालति जहां तहां जिव देई॥
तुम हुत भयों पतंगकी किरा। सिंहलदीप आय उड़ परा॥
सेयों महादेव कर बारू। तजा अन्न भा पवन अहारू॥
तुम सों प्रीति गांठ में जोरी। कटै न काटे छुटै न छोरी॥
सिया भीख रावनकहं दीन्ही। तू अस निठुर अंतरपट दीन्ही॥
रंग तुम्हारे रात्यों चढ़ौं गगन है सूर।
जहं ससि सीतल कहं तपी मन इच्छा धन पूर॥

जोगि भिखार करेसि बहु बाता। कहेसि रंग देखौं तुहि राता॥
कपरा रंगी रंग नहिं होई। हियै औट उपज रंग सोई॥
चांदकी रंग सुरज जो राता। देखौ जगत सांझ परभाता॥
दगध बिरह नित होय अंगारू। दहक आंच दगधे संसारू॥
जो मजीठ औटै बहु आंचा। सो रंग जनम न डोलै रांचा॥
जरै बिरह जो दीपक बाती। भीतर जरि ऊपर है राती॥
जर पलास कोइला के भेसू। तब फूला राता ह्व टेसू॥

पान सुपारी खैर तहं मिलै कर चक सून।
तबलग रंग न राची जबलग होय न चून॥

धन याका सुरंग का चूना। जेहि तन नेह दगध तेहि दूना॥
हौं तुम नेह पियर भा पानू। पेड़ी हुतसन रास बखानू॥
सुनि तुम्हार संसार बड़ौना। जोग लीन्ह तन कीन्ह गड़ौना॥
करहि जो किंगिरी लै बैरागी। नेवती होय बिरहकी आगी॥
फेर फेर तन कीन्ह भुजौना। औट रकत रंग हिरदै औना॥
सुख सुपारी भा मनमारा। सिर सरौत जनु करवट सारा॥
हाड़ चून भै बिरहैं दहो। जानै सोइ दगध दूमि सहो॥

की सुजानि बहु पीरा जेहिं दुख ऐस सरीर।
रकत-पियासे जे अहहिं का जानै पर पीर॥

जोगिहि बहुत छन्द औराहीं। बूंद सेवाती जैस पराहीं॥
पड़हिं भूमिपर होय कचूरू। पड़हिं कदलिपर होय कपूरू॥
पड़हिं समुद्र खार जल ओहीं। पड़हिं सीप सब मोती होहीं॥
पड़हिं मेरुपर अमिरत होई। पड़हि नागमुख विष होय सोई॥

जोगी भंवर निठुर यी दोज। केहि आपनभे कही सो कोज॥
एक ठांव यहि थिर न रहाहीं। रस लै खेल अंतकहं जाहीं॥
होय गृही पुनि होय उदासी। अंतकाल दोनों बिस्वासी॥

तासों नेह जो दृढ़ करहिं थिर आछहि सह देस।
जोगी भंवर भिखारी दूर रहहिं आदेस॥

थलथल नगनहोहिं जेहि जोती। जलजल सीप न उपजहिं मोती
बनबन बिरछ न चंदन होई। तनतन बिरह न उपजै सोई॥
जहं उपजा सो औट मर गयो। जनम निरार न कबहूं भयो॥
जल अम्बुज रवि रहै अकासा। जो पिरीति जानहुं इक पासा॥
जोगी भंवर जो थिर न रहाहीं। जेहि खोजहिं तहं पावै नाहीं
मैं तो पावा आपन जीऊ। छाड़ सेवात जाय नहिं पीऊ॥
भंवर मालती मिलै जो आई। सो तज आन फूल कित जाई॥

चम्पा प्रीति जो तेलहै दिन दिन आकर वास।
गल गल आप हेराय जो मुयहिं न छाड़े पास॥

ऐसें राजकुंवर नहिं मानौ। खिल सार पांसा तब जानौ॥
कच्ची बारहि बार फिरासी। पक्की तौ फिर थिर न रहासी॥
रहै न आठ अठारह भाखा। सोरह सतरह रहै सो राखा॥
सतयें धरै सो खिलन हारा। ढारा ग्यारा जासु न मारा॥
तू लीन्हेसि आछै मन दुआ। औ जग सार चहेसि पुनि छुआ॥
हौं तू नेह रच्यों तोहि पाहीं। दसों दांव तोरे हिय माहीं॥
तब चौपर खिंलौं की मया। जो तरहेल होय सो तिया॥

जेहि मिल बिछुरन औ तपन अन्त तन्त तेहि मन्त।
तेहि मिल कंचन को सहै परबिन मिले न चन्त॥

बोलौं वचन नारि सुनि सांचा। पुरुषका बोल सपुत औ बांचा॥
यहि मन लाग्यो तुही अस नारी। छिन तोहिं पासऔर निसवारी॥
मैं पर बारहिवार ममायों। सिरसो खेल निपट जिव लायों॥
भल भांती में रचना राची। मारेसि तोहि सबै की कांची॥
पाक उठायों आसक रीता। हौं जीतहि हारा तूं जीता॥
मिलके जुग नहिं होइं निरारी। कहां बीच दोतो दिन हारी॥
अब जिव जनम जनम तुहि पासा। चढ़ों जोग आयों कैलासा॥

जाकर जिव वांस जेहिसे तेहि पुनि ताकर टेक।
कनक सुहाग न बिछुरहि औट मिलहिं जो एक॥

वेहंसो धन सुनिके सत बाता। निसै तू मोरे रंग राता॥
निसै भंवर कमल-रस रसा। जो जेहि मनसो तेहि मन बसा॥
जब हीरामन भयो संदेसी। तू हुत मंडफ गयों परदेसी॥
तोर रूप तस देखिउं लोना। जनु जोगी तू मेली टोना॥
सिधि गुटका जो दीठि कमाई। पारे मेल रूप बसयाई॥
भुकति देन कहं में तुहि डीठा। कमल नयन होय भंवर बईठा॥
नयन पुहुप तू अलि भा सोभी। रहा वेध तस उड़सि न लोभी॥

जाकर आस होय जे कहं तहं पुनि ताकर आस।
भंवर जो दाढ़ा कमलका कस न पाव रसवास॥

कौन मोहनी धों हुत तोही। जो तोहि बिथा सो उपजी मोही॥
बिन जलमीन तपे जस लीजा। चातक भयों कहत पिउ पीजा॥

जरौं विरह जस दीपक बाती। मग जोवत भइ सीप सेवाती॥
डार डार जौं कोयल भई। भयों चकोर नींद निस गई॥
मोरे प्रेम प्रेम तुझं भयो। राता हेम अगिन जों तयो॥
हीरादिपहिं जो सूर उदोती। नाहत कित पाहन कहं जोती॥
रवि परगासें कमल विकासा। नाहत कित मधुकर कित वासा॥

तासों कौन अंतरपट जो अस पीतम पीव।
न्योछावर करि आपहं तन मन जोवन जीव॥

हंसि पद्मावत मानी बाता। निश्चै तू मोरे रंग राता॥
तू राजा धनि कुल उजियारा। अस कै चरचों मरम तुम्हारा॥
पै तू जम्बूदीप बसेरा। का जानेसि कस सिंहल मेरा॥
का जानेसि सुमानसर केवा। सुनि सुभंवर भा जिव पर छेवा॥
ना तू सुनी न कोई डीठी। कैसें चित्त होय चित पैठी॥
औ लहि अगिन कर नहिं भेदू। तौलहि औट चुवहि नहिं मेदू॥
कहं संकर तू ऐस लखावा। मिला अलख तस प्रेम चखावा॥

जेहिके सत संघाती ताकर डर सो अमेट।
सो सत कहु कैसे भा दुहूं भांत सो भेट॥

सत्य कहूं सुनि पद्मावती। जहं सत पुरुष तहां सरस्वती॥
पायों सुआ कहे वह बाता। भा निश्चै देखत सुख राता॥
रूप तुम्हार सुन्यों अस नीका। ना जेहिं चढ़ा काहुंकहं टीका॥
चित्र कियों पुनि ले ले नाउं। नयनहि लाग हिये भा ठाउं॥
हों भा सांच सुनत वह घड़ी। तुम होय रूप आय चित चढ़ी॥

हौं भा काठ-मुरति मन मारे। जहं जहं कर सब हाथ तुम्हारे॥
तुम जो डोलावहु सोई डोला। मवन सांस जो दीन्ह तो बोला॥
कोइ सोवै कोई जागै अस हौं गयौं बिमोहि।
परगट गुप्त न दूसर जहं देखों तहं तोहि॥
विहंगी धन सुनके सत भाऊ। हौं रामा तू रावन राऊ॥
रहि जो भवर कमलकी आसा। काह न भोग मानै रसवासा॥
जस सत कहा कुंवर तू मोहो। तस मन मोर लाग पुन तोहो॥
जबहुत कहिगा पंख संदेसौ। सुन्यों कि आवा है परदेसौ॥
तब हुत तुम बिन रहै न जीऊ। चातक भयौं कहत पीउ पीऊ॥
भयौं चकोर सो पन्थ तिहारे। समुद सीप जस नयन पसारे॥
विरह भयौं दहि कोयल कारौ। डार डार जिमि पीउ पुकारौ
कौन सो दिन जब पिउ मिलै बहु मन राता जासु।
वह दुख देखै मोर तब हौं दुख देखौं तासु॥
कहि सत भाव भई कंठ लागू। जनु कंचन औ मिला सुहागू॥
चौरासी आसनपर जोगी। खटरस बन्दक चतुर सो भोगी॥
कुसुम माल अस मालति पाई। जनु चंपा गहि डार नवाई॥
कली वेध जनु भंवर लुभाना। हना राहु अर्जुन के वाना॥
कंचन कली जड़ी नगजोती। वरमा सों वेधा जनु मोती॥
नारंग जानि कीर नख दिये। अधर आंब रस जानहु लिये॥
कौतुक केल करहिं दुख नसा। कन्दहि कुरलहि जनु सर हंसा॥
रही वसाय वासना चोवा चन्दन मेद।
जो अस पद्मिनि रावी सो जानै यह भेद॥

रतनसेन सो कन्त सुजानू। खटरस पंडित सोरह बानू॥
तस है मिले पुरुष औ गोरी। जैसी बिछुड़ी सारस जोरी॥
रचो सार दोनो दुक पासा। है जुग जुग आवहिं कैलासा॥
पिय धन गहि दीन्हो गलबाहाँ। धन बिछुड़ी लागी उर माहां॥
ते छक रस नव केल करेहीं। चोक लाय अधरन रस लेहीं॥
धन नव सात सात औ पांचा। पूरुष दस तेरह किम बांचा॥
लीन्ह विधांस विरह धनसाजा। औ सब रचन जीत हतराजा॥

जनहुं औटकी मिलगयी तस दोनों भयी एक।
कंचन कसत कसौटी हाथ न कीजा टेक॥

चतुर नारि चित अधिक चहूंटी। जहां प्रेम बाढ़ी किम छूटी॥
कुरला काम कोर मनुहारी। कुरला जहं तहं सोन सुनारी॥
कुरला होय कंतकर तोखू। कुरला गहै पांव धन मोखू॥
तेहि कुरला सो सुहाग सभागी। चंदन जैस श्याम कंठलागी॥
गेंद गोंदकी जानहुं लियी। गेंद चाहि धन कोमल भयी॥
दाड़िम दाख वेल रस चाखा। पियके खिल धन जीवन राखा॥
भयो वसन्तकली मुख खोली। बैन सुहावन कोकिल बोली॥

पिउ पिउ करत जीभ धन सूखी बोली चातक भांति॥
परी सो बूंद सीप जनु मोती हिय पेरी सुख सांति॥

भयो जूझ जस रावन रामा। सेज विधांस विरह-संग्रामा॥
लीन्ह लंक कंचन गढ़ टूटा। कीन्ह सिंगार अहा सब लूटा॥
औ जीवन मैमन्त विधांसा। विचला विरह जीव लै नासा॥
टूटी अङ्ग अङ्ग सब भेसा। छूटी मांग भंग भयी केसा॥

कंचुक चूर चूर भइ तानी। टूटि हार मोती छहरानी॥
वारीं ताड़ सलोनी टूटी। बांहू कंगन कलाई फूटी॥
चन्दन अङ्ग छूट तस भेटी। वेसर टूटि तिलक गा मेटी॥

पुहुप सिंगार संवार सब जोवन नवल वसन्त।
अरगज ज्यों हिय लायकै मरगज कीन्हीं कन्त॥

विनय करै पद्मावत बाला। सुधन सुराही पियो पियाला॥
पिय आयसु माथे पर लेऊं। जो मांगै नय नय सिर देऊं॥
पै पिय वचन एक सुनि मोरा। चाखौ प्रिय मधु थोरा थोरा॥
प्रेम सुरा सोई पै पिया। लखै न कोउ कि काहूं दिया॥
चुवा दाख मधु जो इकवारा। दूसर वार लेत वे संभारा॥
ऐकवार जो पीकै रहा। सुख जीवन सुख भोजन लहा॥
पान फूल रस रंग करीजे। अधर अधरसौं चाखा कीजे॥

जो तुम चाहो सो करो ना जानो भल मन्द।
जो भावै सो होय मोहि तुम पिय चहूं अनन्द॥

सुनि धन प्रेम सुराके पिये। मरन जियन डर रहि नहिं हिये॥
जहं मधु तहां कहां निसतारा। की सुघुमरहा की मतवारा॥
सो पी जानि पियै जो कोई। पै न अघाय जाय पर सोई॥
जा कहं होय वार इक लाहा। रहै न वह बिन ओही चाहा॥
अरव गरव सब दिइ बहाई। कै सब जाव न जाय पियाई॥
रातहि दिवस रहै सव भीजा। लाभ न देख न देखी छीजा॥
भोर होत तब पलङ्ग सरीरू। पाय घुमरहा सीतल नीरू॥

एकबार भर देहु प्रियाला बार बार को मांग।
मुहम्मद किमन पुकारै ऐसो दांव जेहि खांग॥
भयो बिहान उठा रवि साईं। चहुं दिसि आईं नखत तराईं॥
सब निस सेज मिला ससि सूरू। हार चौर वलियां भइ चूरू॥
सो घन पान चून भइ चोली। रंग रंगील निरंग भइ डोली॥
जागत रयनि भयो भिनसारा। भइ वेसंभार सोत बेकरारा॥
अलक तुरंगिनि हिरदै परी। नारंग छुइ नागिन विषभरी॥
लरी मुरी हिय हार लपेटी। सुरसरि जनु कालिन्दी भेंटी॥
जनु प्रयाग अरयल विच मिली। वेनी भई सो रोमावली॥
नाभी लाभेते गयी कासीकुण्ड कहाव।
देवता मरहिं कलप सिर आपहिं दोष न लाव॥
विहंसि जगावहिं सखी सयानी। सूर उठा उठि पद्मिनि रानी॥
सुनत सूर जनु कमल विकासा। मधुकर आय लीन्ह मधुवासा॥
जनहुं मात वस पानी वरसी। अति विषभर फूली जनु अरसी॥
नयन कमल जानहु दुइ खोले। चितवन मृग सो अति जनु भूले
तन वेसंभार केस औ चोली। चित अचेत जनु वाली भोली॥
कमल मांझ जनु केसर दीठी। जोवन हुत सो गंवाई वैठी॥
भयी ससि गहे गहन अस गहे। विथरे नखत सेज भर रहे॥
वेल जो राखी इन्द्रकहं पवन वास नहिं देहि।
लाग्यो आय भंवर तेहि कली वेध रस लेहि॥
हंसि हंसि पूछैं सखी सरेखी। जनहु कुमुद चन्दन मुख देखी॥
रानी तुम ऐसी सुकुमारा। वास फूल तन जीव तुम्हारा॥

सहि न सको हिरदैपर हारू। कैसें सहो कन्तकर भारू॥
वदन कमल विकसत दिन राती। सो कुंभलात कहो केहि भांती॥
अधर कमल जो सहत न पानू। कैसे सहा लाग मुख भानू॥
लङ्क जो पैग देत मुरझाई। कैसें रही जो रावन राई॥
चन्दन चोंप पवन अस पीऊ। भयो चित्र सम कस भा जीऊ॥

सब अरगज मरगज भयो लोचन बिंब सरोज।
सत्य कहो पद्मावत सखी परीं सब खोज॥

कहीं सखी आपन सत भाऊ। हौं जो कहत कस रावन राऊ॥
कांपौं भंवर पुहुप पर देखि। जनु ससि गहन तैसि मोहिं लेखि॥
आज मर्म्म मैं जाना सोई। जस पियार पिय और न कोई॥
डर तब लग अह मिला न पीऊ। भानुकि दीठि छूट गा सीऊ॥
जत खन भानु कीन्ह परकासू। कमल-कली मन कीन्ह विकासू॥
हिये छोह उपजा औ सीऊ। पिय न रिसाय लेव पर जीऊ॥
हत जो अपार विरह दुख दूखा। जनहु अगस्त उदधि जल सूखा

हमहुं रंग बहु जानब लहरें जैत समुंद।
पिय लै गयी चतुराई सकुयों न एको बुंद॥

करि सिंगार तापन कह काजं। औही देखौं ठांवहिं ठाजं॥
जो जियमहं तो वही पियारा। तन महं सोइ न होय निरारा॥
नयनहिं महं तो वही समाना। देखौं जहां न देखौं आना॥
आपहिं रस आपहि पी लेई। अधर सहस लागी रस देई॥
हिया थार कुच कंचन लाडू। अगमन भेट दीन्ह कै चाड॥

छलसो लंक लंक सो लसी। रावन रहस कसौटी कसी ॥
जोवन सुभै मिला वह जाई। हौंरो विच छत गयौं हेराई ॥

जस कुछ दीजे धरनकहं आपन लेह संभार।
तस सिंगार सब लीन्हेसि कीन्हेसि मोहिं ठठार ॥

एरी छबीली तुहिं छवि लागी। नैव गुलालकंत संग जागी ॥
चम्प सुंदरसन अस भा सोई। सोनजरद जस केसर होई ॥
वैठि भंवर कुच नारंग वारी। लागी नख अछरें रंग धारी ॥
अधर अधर सों भीज तंवोरी अलकावल सुर मुर गइ मोरी ॥
राय सुनी तुमह औ रत-मुहीं। अलि मुख लाग भई फुलचुहीं ॥
जैस सिंगारहारसों मिली। मालति ऐसि सदा रहि खिली ॥
पुनि सिंगार रस किरा नेवारी। कदम सेवती पियहि पियारी ॥

गोंदकली सम विकसी रुत वसन्त औ फाग।
फूलहु फलहु सदा सुख औ सुख सुफल सुहाग ॥

कहि यह बात सखी उठ धाईं। चम्पावत कहं जाय सुनाईं ॥
आज निरंग पदमावत वारी। जीव न जाने पवन अधारी ॥
तड़क तड़क गा चंदन चोला। धड़क धड़क डर उठे न बोला ॥
अहें जो कली कमल रस पूरी। चूर चूर होय गई सो चूरी ॥
देखो जाय जेसि कुंभलानी। सुनि सुहाग रानी विहंसानी ॥
ले संग सबही पद्मिनि नारी। आई जहं पदमावत वारी ॥
आय रूप सबहीं जो देखा। सोनवरन होय रही सो रेखा ॥

कुसुम फूल जस सखी निरंग देख सब अंग।
चम्पावत भई वारी चूंव केस औ मंग॥